[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1973 **G**

Unique Paper Code : 2051001002

Name of the Paper : Hindi Aupcharik Lekhan (B) (AEC)

Name of the Course : Common Prog. Group

Semester : I

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. वर्तमान समय में कार्यालयी हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

व्यावसायिक पत्र लिखते समय किन किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है ? स्पष्ट करें।

P.T.O.

2. टिप्पण का अर्थ स्पष्ट करते हुए टिप्पण के प्रमुख गुण लिखिए। (12)

अथवा

प्रतिवेदन की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

3. समाचार वाचक पद के लिए स्ववृत्त (बायोडाटा) तैयार कीजिए। (12)

अथवा

छात्र-वृत्ति प्राप्त करने के लिए अपने कॉलेज के प्राचार्य को पत्र लिखिए।

4. 'सूचना के अधिकार' के महत्त्व पर अपने विचार रखिये। (12)

अथवा

विज्ञप्ति का अर्थ स्पष्ट करते हुए विज्ञप्ति की विशेषताएं बताईये।

5. किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए: (6+6)

(क) प्रतिवेदन की विशेषताएं

(ख) कार्यालयी क्षेत्र में विज्ञप्ति

(ग) कार्यालयी और व्यावसायिक पत्र में अंतर

(घ) प्रारूपण का स्वरुप

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1988 **G**

Unique Paper Code : 2051001002

Name of the Paper : Hindi Aupcharik Lekhan (B) (AEC)

Name of the Course : Common Prog. Group

Semester : I

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कार्यालयी हिंदी का परिचय दीजिए। (12)

अथवा

प्रशासनिक कार्यों में टिप्पण की उपयोगिता बताईये।

P.T.O.

2. प्रतिवेदन किसे कहते हैं ? प्रतिवेदन के गुणों पर प्रकाश डालिये। (12)

अथवा

विज्ञप्ति का अर्थ स्पष्ट करते हुए वर्तमान सन्दर्भ में विज्ञप्ति के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

3. किसी प्रकाशक से पुस्तक मंगवाने के लिए पत्र लिखिए। (12)

अथवा

किसी कंपनी में नौकरी के लिए आवेदन पत्र के साथ संलग्न करने हेतु स्ववृत्त (बायोडाटा) तैयार कीजिए।

4. व्यावसायिक लेखन और कार्यालयी लेखन में अंतर लिखिए। (12)

अथवा

अपने महाविद्यालय में हुए चुनाव की एक सारगर्भित रिपोर्ट प्रस्तुत कीजिए।

5. किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए : (6+6)

(क) व्यावसायिक पत्र की विशेषताएं

(ख) स्ववृत्त का महत्त्व

(ग) सूचना का अधिकार से अभिप्राय

(घ) टिप्पण की विशेषताएं

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1972 G

Unique Paper Code : 2051001001

Name of the Paper : Hindi Bhasha : Sampreshan Aur Sanchar (A) (AEC)

Name of the Course : Common Prog. Group

Semester : I

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. संप्रेषण के स्वरूप का परिचय दीजिए। (12)

अथवा

संप्रेषण की प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए, इसकी विशेषताओं का परिचय दीजिए।

2. संप्रेषण की विविध आयामों को सविस्तार लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

प्रभावी संप्रेषण के गुण बताते हुए, इसे विकसित करने की विधियों को सविस्तार लिखिए।

3. लेखन-कौशल के विकास में किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है लिखिए। (12)

अथवा

'कूड़ा निस्तारण योजना' पर एक सर्वेक्षण आधारित रिपोर्ट तैयार कीजिए।

4. संपादकीय-लेखन का महत्त्व बताते हुए, 'मानसिक स्वास्थ्य के महत्त्व': विषय पर संपादकीय लिखिए। (12)

अथवा

अनुच्छेद-लेखन का अर्थ बताते हुए, इसकी विभिन्न शैलियों का परिचय दीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए: (6+6)

(क) डायरी-लेखन

(ख) संप्रेषण और संचार

(ग) ब्लॉग-लेखन

(घ) ई-संप्रेषण का महत्त्व

(2000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 892 **G**

Unique Paper Code : 2052201101

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahithya ka Itihas (DSC-1)

Name of the Course : B.A (Prog.) Hindi

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं

1. आदिकालीन हिन्दी, आधुनिक कालीन हिन्दी से किस प्रकार भिन्न है-स्पष्ट कीजिए।

अथवा

आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

(15)

P.T.O.

2. निर्गुण भक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताओं का परिचय दीजिए।

अथवा

भक्ति आंदोलन के उद्भव और विकास का विस्तृत विवेचन कीजिए। (15)

3. रीतिकाल की प्रमुख काव्यधाराओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

अथवा

रीति से हटकर स्वच्छंद प्रेम-मार्ग पर चलकर रचना करने वाले कवियों और उनके काव्य का परिचय दीजिए। (15)

4. द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय चेतना का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा का विवेचन कीजिए। (15)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :

(i) आदिकालीन लौकिक साहित्य

(ii) प्रसादोत्तर नाटक

(iii) पश्चिमी हिन्दी

(iv) रीतिकाल में वीरकाव्य

(v) राम काव्य परंपरा (10×3=30)

(1500)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....
आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 2450 **G**

Unique Paper Code : 2055201002

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya (B) GE

Name of the Course : **B.A. Prog. Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) गुर गोविंद तौ एक है, दूजा यहु आकार।
आपा मेट जीवत मरै, तो पावै करतार॥

अथवा

रघु हाँकेउ हय राम तन हेरि-हेरि हिहिनहिं।
देखि निषाद बिषादबस धुनहिं सीस पछितहिं॥

(ख) संभलो कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो न निराश करो मन को।

अथवा

सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल के दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाती है दिगन्त को।

(ग) सुधा धार यह नीरस दिल की, मस्ती भगन तपस्वी की
जीवित ज्योति नष्ट नयनों की, सच्ची लगन मनस्वी की
बीते हुए बालपन की यह, क्रीड़ापूर्ण वाटिका है
वही मचलना, वही किलकना हँसती हुई नाटिका है।

अथवा

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार-
सामने तरु मलिका अट्टालिका, प्राकार।

2. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिये : (12×4=48)

(क) पश्चिमी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए।

अथवा

रीतिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ बताइए।

(ख) 'गुरुदेव कौ अंग' के आधार पर गुरु के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।

अथवा

'केवट प्रसंग' के मानवीय मूल्यों की चर्चा कीजिए।

(ग) 'नर हो, न निराश करो मन को' कविता की सार्थकता पर विचार कीजिए।

अथवा

'धूप' कविता में धूप प्रकृति को किस प्रकार प्रभावित कर रही है, स्पष्ट कीजिए।

(घ) बालिका का परिचय कविता मातृत्व के महत्त्व को रेखांकित करती है, स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'वह तोड़ती पत्थर' कविता में निहित सौंदर्य का विवेचन कीजिए।

3. टिप्पणी लिखिए : (कोई 3) (6×3=18)

(क) पूर्वी हिंदी

(ख) सगुण काव्य

(ग) भारतेंदु युग

(घ) छायावाद की प्रवृत्तियां

(ङ) नई कविता

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2446 **G**

Unique Paper Code : 2055091001

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya ka Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : **B.Com. (Prog.) – GE**

Semester : I

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :

   (क) खड़ी बोली

   (ख) अवधी बोली

P.T.O.

(ग) अपभ्रंश भाषा

(घ) हिन्दी भाषा का उद्भव (10,10)

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

(क) वीरगाथा काल

(ख) प्रेमाभक्ति काव्य

(ग) रीतिमुक्त कविता

(घ) भारतेन्दु काल (10,10)

3. मीराबाई के काव्य की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

बिहारी लाल के दोहे भक्ति, नीति और शृंगार की त्रिवेणी हैं। कथन की समीक्षा कीजिए।

4. जयशंकर प्रसाद की कविता में भारतीय राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति हुई है, स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

अकाल और उसके बाद कविता की मूल भाव को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10,10)

(क) जाका गुर भी अंधला, चेला खरा निरंध
अंधा अंधा ठेलिया, दून्यूँ कूप पड़ंत।
चौंसठि दीवा जोइ करि, चौदह चंदा माहि
तिहिं घरि किसकौ चानिणौ, जिहि घरि गोविन्द नाहिं।

अथवा

हरि म्हारा जीवन प्राण अधार। (टेर)
और आसरा णा म्हारे थें विण तीनूं लोक मँझार।
थें विण म्हाणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार।
मीरा रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो नेक निहार।

(ख) वे मोह-बंधन-मुक्त थे, स्वच्छंद थे, स्वाधीन थे;
संपूर्ण सुख-संयुक्त थे, वे शान्ति-शिखरासीन थे।
मन से, वचन से, कर्म्म से वे प्रभु भजन में लीन थे,
विख्यात ब्रह्मानंद-नंद के वे मनोहर मीन थे।

P.T.O.

अथवा

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2447 **G**

Unique Paper Code : 2055091002

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya ka Udbhav aur Vikas (B)

Name of the Course : **B.Com. (Prog.) – GE**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1 (क) हिंदी भाषा के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

राजस्थानी बोलियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

P.T.O.

(ख) राम भक्ति काव्य धारा की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

छायावाद की प्रमुख प्रवृतियाँ बताइए।

2. कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

तुलसी के राम का स्वरुप स्पष्ट कीजिए।

3. 'बिहारी के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'भूषण वीर रस के कवि हैं' विवेचन कीजिए।

4. हरिवंशराय बच्चन का साहित्यिक परिचय दीजिए। (12)

अथवा

'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (10,10,10)

(क) यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।

शीश दियो जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ।।

अथवा

जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ।।

सोइ कृपालु केवटहिं निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा ।।

(ख) बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।

सौहें करैं भौहँनु हँसै, दैन कहै नटि जाइ ।।

अथवा

साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धरि, सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत हैं।

भूषण भनत नाद बिहद नगारन के, नदी नद मद गैबरन के रलत हैं।

ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल-गैल, गजन की ठेल -पेल सैल उसलत हैं।

तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि, थारा पर पारा पारावार यों हलत हैं।

(ग) सरल तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा ॥
लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए, समझ नीड़ निज प्यारा ॥

अथवा

यह महान दृश्य है,
चल रहा मनुष्य है,
अश्रु स्वेद रक्त से,
लथपथ लथपथ लथपथ,
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ।

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper	:	2448
Unique Paper Code –	:	2055091003
Name of The Paper	:	हिन्दी भाषा और साहित्य का उद्भव और विकास (GE) -C
Name of The Course	:	B.Com.(Programme)
Semester :	:	I

Duration : 3 Hours Maximum Marks: 90

छात्रों के लिए निर्देश

क) प्रश्न पत्र के प्राप्त होते ही उपर निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित से से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये:- (12+12=24)
   क) हिन्दी भाषा का सामान्य परिचय दीजिए।
   ख) खड़ी बोली की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
   ग) कृष्ण भक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
   घ) भारतेन्दु युगीन काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

2. कबीरदास की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए। (12)
   अथवा
   सूरदास वात्सल्य के कवि हैं। स्पष्ट कीजिए।

3. बिहारी अथवा घनानंद का साहित्यिक परिचय दीजिए। (12)

4. 'पुष्प की अभिलाषा' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए । (12)
   अथवा
   'रोटी और संसद' कविता के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (10X3 = 30)
   क) निंदक नियरे राखिए ऑगन कुटी छवाय।
   बिन पानी साबुन बिना निर्मल करै सुभाय।
   पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार ।
   ताते यह चाकी भली पीस खाए संसार ।

अथवा

ख) उधो, मन न भए दस बीस
एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को अराधै ईस।
इंद्रि सिथिल भई केसव बिनु , ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारै नंद-नंदन बिन , और नहीं जगदीस।

ग) थौरे ही गुन रीझते बिसराई वह बानि।
तुमहू कान्ह मनौ भए आजकाल्हि के दानी।

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सौ बात।

अथवा

राबरे रूप की रीति अनूप , नयौ नयौ लागत जैतो निहारियै।
त्यौं इन ऑखिन बानि अनौखी, अघानि कहूं नहिं आन तिहारियै।
एक ही जीव हुतौ सुतौ वारयौ, सुजान संकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहै न, दहै घन आनंद, बावरी रीझ के हाथनि हारियै।

घ) मुझे तोड़ लेना बनमाली ,
उस पथ पर तुम देना फेंक ,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाएं वीर अनेक ।

अथवा

एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है ।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2449 **G**

Unique Paper Code : 2055201001

Name of the Paper : Hindi Bhasha or Sahitya (A) (GE)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8+8+8=24)

(क) गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर दावा नागजूह पर सिंहसिरताज को।

दावा पुरहूत को पहारन के कुल पर दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को।

P.T.O.

भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में तम पर दावा रबिकिरनसमाज को।

पूरब पछांह देश देस दच्छिन ते उत्तर लौं जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को।

अथवा

बिनु देखे उपजै न हि आसा जो दिसै सो होई बिनासा।
बरन सहित जो जापै नामु। सो जोगी केवल निहकामु।।
परचौ रामु रवै जो कोई पारसु परसै दुबिधा न होई।
सो मुनि मन की दुबिधा पाई, बिनु दुआरे त्रैलोक समाई।।
मन का सुभाउ सभु कोई करे, करता होई सु अनभे रहे।।

(ख) जोग जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय अद्वैतता कानुन सेवत नैन।।
कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजत
भरे भौन में करत हैं नैननु ही सब बात।।

अथवा

मेरा गर्व, समय के चरणों पर कितना बेबस लोटा है।
मेरा वैभव, प्रभु की आज्ञा पर कितना, कितना छोटा है?
आज उसाँस मधुर लगती है, और साँस कटु है, भारी है,
तेरे विदाई दिवस पर, हिम्मत ने कैसी हिम्मत हारी है।

(ग) हिमाद्री तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ- सोच लो,
प्रशस्त पुन्य पंथ है- बढ़े चलो- बढ़े चलो

अथवा

छोटी-बड़ी कई झीलें
उनके श्यामल-नील सलिल में
समतल देशों से आ-आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्त-मधुर बिसतन्तु खोजते
हंसों को तिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।।

2. राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

हिन्दी भाषा की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।

3. रीतिकाल की प्रमुख विशेशताओं का उल्लेख कीजिए। (12)

अथवा

आदिकाल की सामान्य विशेशताएँ लिखिए।

4. बिहारी ने अपने दोहों में 'गागर में सागर' भरा है। इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

रैदास सामाजिक चेतना के कवि हैं। स्पष्ट कीजिए।

5. 'बादल को घिरते देखा है' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

अथवा

जयशंकर प्रसाद "राष्ट्रीय चेतना" के कवि हैं। स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (6×3=18)

(i) संपर्क भाषा

(ii) निगुर्णकाव्य धारा

(iii) रीतिबद्ध काव्य धारा

(iv) भारतेंदुकाल

(v) नगार्जुन का साहित्यिक परिचय

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2451 **G**

Unique Paper Code : 2055201003

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya (c)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – GE**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (8×3=24)

(क) चेतनि चौकी बैसि करि, सतगुरु दीन्हा धीर।
निरभै होइ निसंक भजि, केवल कहै कबीर॥
सतगुर बपुरा क्या करै, जे सिषही माहै चूक।
भावै त्यूं प्रमोधि ले, ज्यूँ बँसि बजाई फूंक॥

P.T.O.

अथवा

ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को आराधै ईस।।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारै नंद-नँदन बिनु, और नहीं जगदीस।।

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिझत', मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु हीं सब बात।।
मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।।
जा तन की झाँई परैं स्यामु हरित-दुति होइ।।

अथवा

रावरे, रूप की रीति अनूप नयौ नयौ लागत ज्यों-ज्यों निहारिये
त्यों इन आखिन बानि अनोखी, अघानि कहूं नहि आन तिहारिये।
एक ही जीव हुतौ सुतौ वार् यौ, सुजान संकोच औ सोच सहारिये।
रोकी रहै न दहै घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारिये।।

(ग) पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला!
सपने जाने कहाँ मिटे, सब धूल हो गये!
मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,
बाल कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछा कर!
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,

अथवा

लीक पर वे चले
जिनके चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पन्थ प्यारे हैं।
साक्षी हों राह रोके खड़े
पीले बाँस के झुरमुट,
कि उनमें गा रही है जो हवा
उसी से लिपटे हुए सपने हमारे हैं।

2. भक्तिकालीन संत काव्य धारा की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

हिंदी भाषा के उद्भव और विकास का मूल्यांकन कीजिए।

3. कबीरदास की सामाजिक चेतना का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

सूरदास के साहित्य में वात्सल्य वर्णन पर विचार कीजिए।

4. बिहारी की काव्य में गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति विचार कीजिए। (12)

अथवा

घनानंद के काव्य की मूल संवेदना का निरूपण कीजिए।

5. "आह! धरती कितना देती है" कविता के आधार पर पन्त के काव्य की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

"लीक पर वे चले" कविता का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणियाँ लिखिए : (6×3=18)

(i) पश्चिमी हिंदी की बोलियाँ

(ii) कबीर की भाषा

(iii) बिहारी का शृंगार वर्णन

(iv) सर्वेश्वर की काव्यकला

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 981 **G**

Unique Paper Code : 2052201102

Name of the Paper : Hindi Cinema Aur Uska Adhyayan (DSC-2)

Name of the Course : B.A. (Prog.) Hindi

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

विद्यार्थियों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी सिनेमा के इतिहास पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

जनमाध्यम के रूप में सिनेमा की भूमिका पर अपने विचार अभिव्यक्त कीजिये।

P.T.O.

2. साहित्य और सिनेमा के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

हिन्दी सिनेमा में यथार्थ की अभिव्यक्ति पर अपने विचार लिखिए।

3. सिनेमा की तकनीक में कैमरा, लाईट और साउंड के महत्व पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

सिनेमा में कैमरे की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

4. हिन्दी सिनेमा के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार की विवेचना कीजिए। (18)

अथवा

'मदर इंडिया' फिल्म की समीक्षा कीजिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (9,9)

(क) हिन्दी सिनेमा और कॉमेडी

(ख) सिनेमा और स्त्री

(ग) स्वतंत्रा पूर्व का हिन्दी सिनेमा

(घ) व्यावसायिक सिनेमा

(1000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2319 **G**

Unique Paper Code : 2054001003

Name of the Paper : Hindi Cinema aur Uska Adhyyan (GE)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

हिंदी सिनेमा और उसका अध्ययन

(Generic Elective)

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी सिनेमा का वैशिष्ट्य बताइए। (18)

P.T.O.

अथवा

जनमाध्यम के रूप में सिनेमा के सामाजिक प्रभावों का वर्णन करें, सिनेमा अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करने में कितना सफल रहा है?

2. 'व्यवसायिक सिनेमा अधिक समृद्ध है जबकि सामाजिक सरोकारों की दृष्टि से कला फिल्में अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।' इस कथन की समीक्षा करते हुए व्यवसायिक एवं कला फिल्मों के मूलभूत अंतर को बताइए। (18)

अथवा

अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में हिंदी सिनेमा का क्या स्थान है? इस दृष्टि से कुछ चुनिंदा हिंदी फिल्मों का परिचय दीजिए।

3. किसी फिल्म की पटकथा में पात्र परिकल्पना का क्या महत्त्व है? एक अच्छी पटकथा के लिए किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है? (18)

अथवा

सिनेमा अध्ययन की दृष्टियों का परिचय देते हुए 'मदर इंडिया' फिल्म की समीक्षा कीजिए।

4. सिनेमा समीक्षा के विविध पहलुओं की चर्चा करते हुए 'पीकू' फिल्म की समीक्षा कीजिए। (18)

अथवा

'सिनेमा कैमरे की आंख से दिखाया जाता है, जिसका नियंत्रण निर्देशक के हाथ में होता है।' उपर्युक्त कथन का विवेचन करते हुए फिल्म निर्माण में कैमरा की भूमिका बताइए।

5. निम्नलिखित में से **तीन** प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (6+6+6=18)

(i) सिनेमा में दृश्य और स्पेशल इफेक्ट का महत्त्व बताइए।

(ii) हिंदी सिनेमा में तकनीकी प्रयोगों का संक्षिप्त परिचय

(iii) सिनेमा हेतु पटकथा का महत्त्व स्पष्ट करें।

(iv) विवादित फिल्मों के संदर्भ में सेंसर बोर्ड की भूमिका स्पष्ट करें।

(v) क्षेत्रीय सिनेमा की भाषा।

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 1975 **G**

Unique Paper Code : 2051001004

Name of the Paper : Hindi–D

Name of the Course : **Common Prog. Group : Foreign Students – AEC**

Semester : I

समय : 2 घण्टे पूर्णांक : 60

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. **All** questions are compulsory.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

P.T.O.

1. निम्नलिखित वर्णों में से **तीन** स्वर एवं **तीन** व्यंजन चुनकर अलग - अलग लिखिए - (6)

Choose any **three** Vowels and consonants from the following alphabets and write them separately.

औ, ब, न, ए, च, ओ, उ, न, र, ई

2. निम्नलिखित शब्दों में संयुक्त व्यंजनों के प्रयोग वाले छह शब्द चुनकर लिखिए - (6)

Choose and write any **six** words from the following words using compound consonants.

चल, कक्ष, यमुना, श्रम, सघन, त्रिशूल, यज्ञ, अखाड़ा, लक्ष्य, पवित्र

3. (क) किन्हीं **तीन** शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करके लिखिए - (3)

Write in any **three** words using anuswara at the appropriate place -

गध, अबर, कधा, गदा, उमग

(ख) किन्हीं 3 शब्दों में उचित स्थान पर अनुनासिक का प्रयोग करके लिखिए - (3)

Write in any three words using anunasik in the appropriate place -

सास, लडकिया, चाद, वादिया, कहानिया

4. (क) दिए गए वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए - (3)

Put appropriate punctuation marks in the given sentences.

(अ) कुत्ते क्यों भोक रहे हैं (।/,/?)

(ब) चावल दाल और सब्जी जरूर खाना चाहिए। (।/,/?)

(स) सभी को कानून का पालन करना चाहिए (?/,/।)

(ख) दिए गए विराम चिहनों के नाम लिखिए - (3)

Name the given punctuation marks.

(अ) ;

(ब) ?

(स) -

5. (क) दिए गए वाक्यों में से संज्ञा शब्द पहचानकर लिखिए - (6)

Identify and write **six** noun words from the given sentences.

(i) राहुल बहुत तेज दौड़ता है।

(ii) काशी बहुत दूर है।

(iii) गाय चर रही है।

(iv) मजदूर अपना काम कर रहे हैं।

(v) गाड़ी आने वाली है।

(vi) लड़की की पढ़ाई पूरी हो गयी है।

(vii) गुलाब सुंदर होता है।

(viii) श्रेया खाना बना रही है।

(ख) दिए गए वाक्यों में से छह सर्वनाम शब्द पहचानकर लिखिए - (6)

Identify and write **six** pronoun words from the given sentences -

(i) आप आ रहे हैं?

(ii) आज तुम क्या कर रहे हो?

(iii) वह नहीं जाएगा।

(iv) कोई कुछ करता क्यों नहीं?

(v) सोहन ने उसको मारा।

(vi) मुझे आज बहुत काम है।

(vii) उसको पैसे दे दो।

(viii) हम सभी अच्छे लोग हैं।

6. (क) दिए गए शब्दों में से किन्हीं **बारह** शब्दों का हिंदी पर्याय लिखिए - (12)

Write Hindi Synonym of any **twelve** words from the given words -

(i) Watermelon

(ii) Cabbage

(iii) Peas

(iv) Monday

(v) Qutub Minar

(vi) Winter

(vii) Summer

(viii) Taj Mahal

(ix) Mother

(x) Uncle

(xi) Teeth

(xii) Butter

(xiii) Sheet

(xiv) Fan

(ख) दिए गए शब्दों में से किन्हीं बारह शब्दों का अंग्रेजी पर्याय लिखिए - (12)

Write English Synonym of any **twelve** words from the given words –

(i) सेब

(ii) केला

(iii) आलू

(iv) खीरा

(v) रविवार

(vi) बसंत

(vii) दादी

(viii) अजायबघर

(ix) नाक

(x) सिर

(xi) दूध

(xii) दही

(xiii) पंखा

(xiv) घड़ी

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....
आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 1975A **G**

Unique Paper Code : 2051001006

Name of the Paper : Hindi E : Compulsory Hindi Syllabus (CHS)

Name of the Course : **Common Prog. Group – AEC**

Semester : I

Duration : 2 Hours
समय : 2 घण्टे

Maximum Marks : 60
पूर्णांक : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

P.T.O.

1. अपने परिवार के विषय में दस वाक्य लिखिए। (10)

अथवा

मेरा दैनिक कार्यक्रम विषय पर 10 वाक्य लिखिए।

2. मेट्रो स्टेशन पर पिता-पुत्री का वार्तालाप 10 वाक्यों में लिखिए। (10)

अथवा

किसी देखे गए क्रिकेट मैच के विषय में अपने मित्र से की गई बातचीत को 10 वाक्यों में लिखिए।

3. बाजार में कपड़ों की एक दुकान पर दुकानदार के साथ बातचीत को 10 वाक्यों में लिखिए। (10)

अथवा

सार्वजनिक बस में यात्रा कर रहे दो यात्रियों के वार्तालाप को 10 वाक्यों में लिखिए।

4. निम्नलिखित वर्णों में से **तीन स्वर** और **तीन व्यंजन** चुनकर अलग-अलग लिखिए। (6)

ऐ, इ, क, प, छ, ठ, अ, फ, ऊ, य।

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं** छह शब्दों के वचन बदलिए - (6)

पुस्तक, लड़की, दरवाजे, मेज, पत्ता, चिड़िया, गेंदें, झूला, डिब्बा

अथवा

निम्नलिखित में से **किन्हीं** छह शब्दो के लिंग बदलिए -

मालिक, शिक्षक, कुत्ता, नौकर, नायक, ढोल, सेठ, धोबी, लड़का

6- निम्नलिखित वाक्यों में से छह सर्वनाम शब्द पहचानकर लिखिए - (6)

मोहन : दूध में क्या गिर गया?

राकेश : कुछ तो गिरा है, मुझे लगता है शायद मच्छर है।

मोहन : क्या आप बता सकते हैं कि यहाँ मच्छर कहाँ से आया?

राकेश : मैं तो नहीं बता सकता, तुम ही बता दो।

7- दिए गए वाक्यों में से छह विशेषण शब्द पहचानकर लिखिए - (6)

(i) श्याम पाँच किलो चीनी खरीदकर लाया।

(ii) वह बहुत मोटा आदमी है।

(iii) निकम्मे लोगों को सफलता नहीं मिलती।

(iv) काला हिरण गाड़ी से मारा गया।

(v) मोहिनी ने महंगा फोन खरीदा है।

(vi) दोनों भाइयों में बड़ा प्रेम है।

(vii) मेरे घर में चार पालतू जानवर हैं।

(viii) कई विद्यार्थी खेल प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं।

8. निम्नलिखित शब्दों में से छह क्रिया शब्द पहचानकर लिखिए :-

राजा, पकाना, मजदूर, भरना, लम्बा, खेलना, लिखना, भला, लटकना, तुम्हारा, उसका, हिलना

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 1990A **G**

Unique Paper Code : 2051001006

Name of the Paper : Hindi E : Compulsory Hindi Syllabus (CHS)

Name of the Course : **Common Prog. Group – AEC**

Semester : I

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

समय : 2 घण्टे पूर्णांक : 60

Instructions for Candidates

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

P.T.O.

1. अपना परिचय दस वाक्यों में प्रस्तुत कीजिए। (10)

अथवा

आप दिन को कैसे बिताते हैं, दस वाक्यों में लिखिए।

2. आपने दीपावली का त्योहार कैसे मनाया, मित्र को फोन पर बताइए। (10)

अथवा

कॉलेज में परीक्षा की तैयारी के बारे में माता जी को फोन पर बताइए।

3. मॉल में कपड़े खरीदते हुए दुकानदार से हुई बातचीत को लिखिए। (10)

अथवा

दो रेल यात्रियों के बीच हुए वार्तालाप को लिखिए।

4. निम्नलिखित वर्णों में से **तीन स्वर** और **तीन व्यंजन** चुनकर अलग-अलग लिखिए। (6)

त, औ, ल, व, य, ए, ग, न, ऊ, आ

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं** छह शब्दों के वचन बदलिए। (6)

उँगली, लड़का, औरत, पुस्तक, पड़ोसन, दवाई, बेटे, कमीजें, रोटी, पत्ती, ताला, चाबियाँ

अथवा

किन्हीं छह शब्दों के लिंग बदलिए। (6)

पुत्र, घोड़ा, कुम्हार, गोरा, पाठक, प्रियतम, बुढ़िया, बंदर, वर, नाग, गायक, शिक्षक

6. निम्नलिखित वाक्यों में से छह सर्वनाम शब्द पहचानकर लिखिए। (6)

(i) मैं अपना कार्य स्वयं करता हूँ।

(ii) वे तो कल सुबह ही चले गए थे।

(iii) यह खिलौना मेरा है, वह उसका है।

(iv) मोहन कक्षा में प्रथम आया है, इसलिए उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

(v) कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है।

(vi) कल कौन यहाँ आया था?

(vii) जो अधिक पढ़ेगा, वह अधिक अंक प्राप्त करेगा।

(viii) आप यहाँ नहीं बैठ सकते।

7. दिए गए वाक्यों में से छह विशेषण शब्द पहचानकर लिखिए- (6)

(i) वह एक चालाक लड़का है।

(ii) वह प्रतिदिन थोड़ा दूध पीता है।

(iii) यह पुस्तक बहुत पुरानी है।

(iv) यहाँ पर सैंकड़ों लोग जमा हैं।

(v) प्रत्येक व्यक्ति रो रहा था।

(vi) कपिल सवा किलो चीनी लाया।

(vii) इस विद्यालय में सात सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं।

(viii) उसने काली सलवार पहनी है।

8. निम्नलिखित शब्दों में से छह क्रिया शब्द पहचानकर लिखिए :

पीना, श्याम, जागना, यह, चलना, महेश, दौड़ना, रोना, बैठना, आदमी, हँसना, छोटा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 618 **G**

Unique Paper Code : 2052101103

Name of the Paper : Hindi Kahani (DSC-3)

Name of the Course : **B.A. (HONS.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **'दो'** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) "राम-राम यह भी कोई लड़ाई है। दिन रात खंदकों में बैठे हड्डियां अकड़ गईं। लुधियाने से दस गुना जाड़ा। और मेह और बरफ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धंसे हुए हैं। गनीम कहीं दिखता नहीं, घंटे दो घंटे में कान के पर्दे फाड़ने वाले

धमाके के साथ सारी खंदक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गैबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का जलजला सुना था। यहाँ दिन में पच्चीस जलजले होते हैं। जो कहीं खंदक से बाहर साफ या कुहनी निकल गई तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।"

(स) पत्र-संपादक अपनी शांति कुटी में बैठा हुआ कितनी धृष्टता और स्वतंत्रता के साथ अपनी प्रबल लेखनी से मंत्रिमंडल पर आक्रमण करता है। परन्तु ऐसे अवसर आते हैं, जब वह स्वयं मंत्रिमंडल में सम्मिलित होता है। मंडल के भवन में पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचारशील, कितनी न्याय-परायण हो जाती है। इसका कारण उत्तरदायित्व का ज्ञान है। नवयुवक युवावस्था में कितना उद्दण्ड रहता है। माता-पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं। वे उसे कुल-कलंक समझते हैं; परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यवस्थित-चित्त उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील, कैसा शांतचित्त हो जाता है। यह भी उत्तरदायित्व के ज्ञान का फल है।'

(ग) शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पत्र-भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले, "नहीं मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का यहाँ आना-जाना फिर

से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ से कहें कि जल्दी से स्वाना स्वा के शाम को अपनी कोठरी में चली जाएँ। मेहमान कहीं आठ बजे आएँगे, इससे पहले ही अपने काम से निबट लें।

(घ) रमेश चौधरी से फोन पर यह समाचार पाकर राकेश भी गहरे अवसाद से भर गया था। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि इतनी कुशाग्र बुद्धि का सोनकर आत्महत्या कर सकता है। फोन पर रमेश की आक्रोशित आवाज सुन कर राकेश की उलझने और ज़्यादा बढ़ गई थी। उसके काँपते हाथ में थमा फोन भी थरथरा गया था। बहुत मुश्किल से राकेश फोन क्रेडिल पर रख पाया था... राकेश ने स्वयं को संभालने का प्रयास किया। फिर भी उसे लग रहा था जैसे उसका हृदय डूब रहा है। वह धम्म से कुर्सी में धंस गया। उसके मुँह से अस्फुट शब्द निकले, "सोनकर यह क्यों किया तुमने..!"

2. कहानी के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी का विश्लेषण कीजिए। (17)

अथवा

'पंच-परमेश्वर' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

3. 'तीसरी कसम' कहानी में निहित मूल संवेदना की विवेचना कीजिए। (17)

P.T.O.

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी आधुनिक सामाजिक मूल्यों में संक्रमण से उपजी मानसिकता की कहानी है।' स्पष्ट कीजिए।

4. 'वारिस कहानी' के आधार पर 'मास्टर जी' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (16)

अथवा

'वापसी कहानी' के कथ्य को उद्घाटित कीजिए। (10+10=20)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

(क) 'जुम्मन शेख' का चरित्र-चित्रण

(ख) 'तीसरी कसम' कहानी की भाषा-शैली

(ग) 'दोपहर का भोजन' कहानी का सार

(घ) 'घुसपैठिए' कहानी का शिल्प

DEC-2023

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5623 **G**

Unique Paper Code : 12051102

Name of the Paper : Hindi Kavita (Adikal evam Bhaktikaleen Kavya)

Name of the Course : **Hindi (Hons.)**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. 'अमीर खुसरो भारतीय लोकजीवन के चितेरे हैं।' विवेचना कीजिए।

अथवा

'विद्यापति ने राधा कृष्ण के प्रेम का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है।' उनके पदों के आधार पर सिद्ध कीजिए। (12)

2. कबीर की साहित्यिक विशेषताएं लिखिए।

अथवा

सूफी काव्य परम्परा में मधुमालती का स्थान निर्धारित कीजिए।

(12)

P.T.O.

3. उद्धव सन्देश के आधार पर सूरदास के विरह वर्णन की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

मीरा के काव्य में निहित विद्रोह चेतना को स्पष्ट कीजिए। (12)

4. कवितावली के आधार पर तुलसीदास की भक्ति भावना का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

अथवा

तुलसीदास के काव्य सौंदर्य की विशेषताएँ बताइए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस।।
खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग।
तन मेरो मन पीउ को, दोउ भए एक रंग।।

अथवा

जहाँ-जहाँ पद-जुग धरई। तहिं-तहिं सरोरुह झरई।।
जहाँ-जहाँ झलकए अंग। तहिं-तहिं बिजुरि-तरंग।।
कि हेरलि अपरुब गोरि। पइठलि हिअ मधि मोरि।।
जहाँ-जहाँ नयन विकास। ततहिं कमल प्रकास।।
जहाँ लहु हास संचार। तहिं-तहिं अमिअ-बिथार।।
जहाँ-जहाँ कुटिल कटाख। ततहिं-मदन-सर लाख।। (8)

(ख) सूते स्याम सेत औ राते। लागत डिएँ निफरि ही जाते
चपल बिसाल तीख अति बाँके। खंजन पलक-पंख सेउ ढाँके।
पारधि जनु अगनित जिउ हरे। पौढ़ें धनुक सीस तर धरे।
सनमुख मीन केलि जनु करहीं। कै जनु दुइ खंजन उड़ि लरहीं।
दुवो नैन जिय के बियाधा। देखत उठै मरै को साधा।

अथवा

हेरी म्हा तो दरद दिवाणां म्हारां दरद न जाण्यां कोय।।
घायल री गत घायल जाणयां, हिबड़ो अगण संजोय।
जौहर की गत जौहर जाणै, क्या जाण्यां जिण खोय।
दरद की मारयां दर दर डोल्यां वैद मिल्या णा कोय।
मीरां री प्रभु पीर मिटाँगां जब वेद सांवरो होय।। (7)

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं दो का रचना कौशल विश्लेषित कीजिए : (6×2=12)

(क) मेरो मन अनत कहां सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी, फिरि जहाज पै आवै।।
कमलनैन कौ छाड़ि महातम और देव कौ ध्यावै।
परम गंग कों छाड़ि पियासो दुर्मति कूप खनावै।।
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील-फल भावै।
सूरदास, प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।।

(भाव सौंदर्य)

अथवा

सीस जटा, उर बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछीसी भौंहैं।
तून, सरासन, बान धरे, तुलसी बन-मारग में सुठि सोहैं।।
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यों" हमरो मन मोहैं।
पुँछति ग्रामबधू सिय सों "कहौ साँवरे से, सखि! रावरे को हैं"?।।

(रूप वर्णन)

(ख) अब का डरौं डर डरहि समाँनाँ, जब थैं मोर तोर पहिचाँनाँ।।टेक।।
जब लग मोर तोर करि लीन्हा, भै भै जनमि जनमि दुख दीन्हा।।
अगम निगम एक करि जाँनाँ, ते मनवाँ मन माँहि समाना।।
जब लग ऊँच नीच कर जाँनाँ, ते पसुवा भूले भ्रँम नाँनाँ।
कहि कबीर मैं मेरी खोई, बहि राँम अवर नहीं कोई।।

(प्रतीकात्मकता)

अथवा

बहुत कठिन है डगर पनघट की।
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी
मेरे अच्छे निजाम पिया।
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी
ज़रा बोलो निज़ाम पिया।
पनिया भरन को मैं जो गई थी।
दौड़ झपट मोरी मटकी पटकी।
बहुत कठिन है डगर पनघट की।
खुसरो निज़ाम के बलि-बलि जाइए।
लाज राखे मोरे घूँघट पट की। (भाषा सौंदर्य)

Sr. No. of Q.P. : 542

Unique paper code : 2052101101 अनुक्रमांक :

Name of the paper : Hindi Kavita Aadikal Evam Nirgunbhakti

Name of course : B.A.(Hons) Hindi

Type of Paper : DSE-I

Semester : I

Maximum Marks : 90 Time : 3 Hours

छात्रों के लिए निर्देश:

1. इस प्रश्न पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निधारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्यहैं।

1. निम्नलिखित पद्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (9x3=27)

(क) भयौ एक फुरमान। बान जोगिनिपुर संध्यौ॥
सोइ सबद अरु बान। अग्र अविचल कर बंध्यौ॥
भयौ त्रियौ फुरमान। तानि रप्यौ श्रवनंतरि॥
तियौ भयौ अनभयौ। हरयौ पतिसाही धरंतरि॥
लै दसन रसन तालु असधन। सीस फट्टि दह दिसि गवन॥
सुरतान परयो षां पुक्करै। भयौ चंद राजन मरन॥

अथवा

नन्दक नन्दन कदम्बेरि तरुतरे धिरे-धिरे टरलि बोलाव।
समय संकेत निकेतन बइसल बेरि बेरि बोलि पठाव॥
सामरी तोहरा लागि अनुखने विकल मुरारि॥
जमुनाक तिर उपवन उदवेगल फिरि फिरि ततहि निहारि॥
गौरस बिके निके अबइते जाइते जनि जनि पुंछ बनवारि॥
तोंहि मतिमान सुमति मधुसुदन बचन सुनह किछु मोरा॥
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति वेन्दह नन्दकिसोरा॥

(ख) इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूँ जीव।
लोही सीचौं तेल ज्यूं, कब मुखु देखौं पीव।।
सुखिया सब संसार है, खाये अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवै।

अथवा

मेरी हार हिरांनौं मैं लजाऊं, सास दुरामनि पीव डराऊं॥
हार गुह्यौर मेरो राम ताग, बिचि बिचि मान्यक एक लाग॥
रतन प्रवालै परम जोति, ता अंतरि अंतरि लागे मोति॥
पंच सखी मिलिहैं सुजान, चलहु त जईये त्रिवेणी न्हान।
न्हाइ धोइ कै तिलक दीन्ह, नां जानूं हार किनहूं लीन्ह॥
हार हिरांनी जन बिमल कीन्ह, मेरौ आहि परोसनि हार लीन्ह॥
तिनि लोक की जानैं पीर, सब देव सिरोमनि कहै कबीर॥

(ग) मिलहिं रहसि सब चढ़हिं हिंडोरी। झूलि लेहिं सुख बारी भोरी ॥
झूलि लेहु नैहर जब ताईं। फिरि नहिं झूलन देइहिं साईं ॥
पुनि सासुर लेइ राखिहि तहाँ। नैहर चाह न पाउब जहाँ ॥
कित यह धूप, कहाँ यह छाहाँ। रहब सखी बिनु मंदिर माहाँ ॥
गुन पूछिहि और लाइहि दोखू। कौन उतर पाउब तहँ मोखू ॥
सास ननद के भौंह सिकोरे। रहब सँकोचि दुवौ कर जोरे ॥
कित यह रहसि जो आउब करना। ससुरेइ अंत जनम दुख भरना ॥
कित नैहर पुनि आउब, कित ससुरे यह खेल ॥
आपु आपु कहँ होइहि, परब पंखि जस डेल ॥

अथवा

सखी एक तेइ खेल न जाना। मैं अचेत मनिहार गवाँना ॥
कवल डार गहि मैं बेकरारा। कासों पुकारौं आपन हारा॥
कित खेलै आइउँ एहि साथा। हार गँवाइ चलिउँ लेइ हाथा ॥
घर पैठत पूँछब यह हारू। कौन उतर पाउब पैसारू॥
नैन सीप आँसू तस भरे। जानौ मोति गिरहिं सब ढरे॥
सखिन कहा चौरी कोकिला। कौन पानि जेहि पौन न मिला ? ॥
हार गँवाइ सो ऐसे रोवा। हेरि हेराइ लेइ जौ खोवा ॥
लागीं सब मिलि हेरै, बूड़ि बूड़ि एक साथ।
कोइ उठी मोती लेइ, काहू चौंधा हाथ ॥

2. 'बानबेध समय' के आधार पर चंदबरदाई की काव्यभाषा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'बानबेध समय' की रस-योजना की समीक्षा कीजिए। (14)

3. विद्यापति के काव्य-सौंदर्य का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

विद्यापति की गीति योजना पर विचार कीजिए। (14)

4. कबीर की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिए।

अथवा

कबीर काव्य के आधार पर गुरु की महत्ता पर प्रकाश डालिए। (14)

5. जायसी की काव्य भाषा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

मानसरोदक खंड की अलौकिकता पर प्रकाश डालिए। (14)

6. किसी एक विषय पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(क) बानबेध समय का प्रतिपाद्य
(ख) कबीर की काव्य भाषा
(ग) विद्यापति की प्रेम भावना

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 827 **G**

Unique Paper Code : 2052202301

Name of the Paper : Hindi Katha Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) राजा ने सबसे सहमत होकर आज्ञा दी। 'प्राणदण्ड!' मधुलिका बुलाई गई। वह पगली-सी आकर खड़ी हो गई। कोशल नरेश ने पूछा- 'मधुलिका, तुझे जो पुरस्कार लेना हो, माँग।' वह चुप रही।

राजा ने कहा- 'मेरी निज की जितनी खेती है, मैं सब तुझे देता हूँ। मधुलिका ने एक बार बन्दी अरुण की ओर देखा।

P.T.O.

उसने कहा- ' मुझे कुछ नहीं चाहिए। अरुण हँस पड़ा। राजा ने कहा- 'नहीं, मैं तुझे अवश्य दूँगा। माँग ले।' तो मुझे भी प्राणदंड मिले। कहती हुई वह बन्दी अरुण के पास जा खड़ी हुई।

अथवा

"ऐसी होली-
ऐसी होली खेलो लाल! ऐसी होली-
जन्मभूमि का दुख हरने को माता का मंगल करने को।
भरने को पीड़ित हृदयों में, सुख के झर-झर-झर झरने को।
ले कर में कराल करवाल,
ऐसी होली-
ऐसी होली खेलो, लाल!"

(ख) खाने के बाद सहसा बिलाव जोर से गुस्से से चीखा और उछलकर गोद से बाहर जा कूदा। गुस्से से गुर्राने लगा। धीरे-धीरे गुस्से का स्वर दर्द के स्वर में परिणत हुआ, फिर एक करुण सिसियाहट में, एक दुर्बल चीख में, एक बुझती हुई-सी कराह में, फिर एक सहसा चुप हो जाने वाली लंबी साँस में। देविंदरलाल जी की आँखें निःस्पंद यह सब देखती रहीं।

आजादी भाईचारा। देश-राष्ट्र .....

एक ने कहा कि हम जोर करके रखेंगे और रक्षा करेंगे, पर घर से निकाल दिया। दूसरे ने आश्रय दिया, और विष दिया। और साथ में चेतावनी की विष दिया जा रहा है।

अथवा

गजाधर बाबू ने आहत विस्मित दृष्टि से पत्नी को देखा। उनसे अपनी हैसियत छिपी न थी। उनकी पत्नी तंगी का अनुभव कर उसका उल्लेख करतीं। यह स्वाभाविक था लेकिन उनमें सहानुभूति का पूर्ण अभाव गजाधर बाबू को बहुत खटका। उनसे यदि राय-बात की जाती कि प्रबंध कैसे हो तो उन्हें चिन्ता कम संतोष अधिक होता लेकिन उनसे तो केवल शिकायत की जाती थी जैसे परिवार की सब परेशानियों के लिए, वही जिम्मेदार थे।

(ग) जालपा के लिए इन चीजों में लेशमात्र भी आकर्षण न था। हां, वह वर को एक आंख देखना चाहती थी, वह भी सबसे छिपाकर, पर उस भीड़-भाड़ में ऐसा अवसर कहां। द्वारचार के समय उसकी सखियां उसे छत पर खींच ले गईं और उसने रमानाथ को देखा। उसका सारा विराग, भारी उदासीनता, सारी मनोव्यथा मानो छू-मंतर हो गई थी। मुंह पर हर्ष की लालिमा छा गई। अनुराग स्फूर्ति का भंडार है।

अथवा

इस समय रमा की आंखों से आंसू तो न निकलते थे, पर उसका एक-एक रोआं रो रहा था। जालपा से अपनी असली हालत छिपाकर उसने कितनी भारी भूल की! वह समझदार औरत है, अगर उसे मालूम हो जाता कि मेरे घर में भूंजी भांग भी नहीं है, तो वह मुझे कभी उधार गहने न लेने देती। उसने तो कभी

अपने मुंह से कुछ नहीं कहा। मैं ही अपनी शान जमाने के लिए मरा जा रहा था। इतना बड़ा बोझ सिर पर लेकर भी मैंने क्यों किफायत से काम नहीं लिया?

2. कहानी के स्वरूप को समझाते हुए उसकी संरचना की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'उपन्यास' से आप क्या समझते हैं? उसकी संरचना पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'मधुलिका' का चरित्र-चित्रण करते हुए पुरस्कार कहानी में निहित उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'ऐसी होली खेलो, लाल' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

4. 'शरणदाता' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।

अथवा

'वापसी' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

5. 'गबन' उपन्यास मध्यवर्गीय दिखावटी प्रवृत्ति की समस्या को चित्रित करता है। कथन की पुष्टि सोदाहरण कीजिए।

अथवा

'रमानाथ' का चरित्र-चित्रण लिखिए। (15)

(3000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3099 **G**

Unique Paper Code : 52051307

Name of the Paper : Hindi 'A'

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निबंध के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

संस्मरण के विकास क्रम का सामान्य परिचय दीजिए।

2. 'धूप का एक टुकड़ा' कहानी का सार लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

कहानी कला की दृष्टि से 'हिली-बोन की बत्तखें' कहानी की समीक्षा कीजिए।

3. 'करुणा' निबंध का सार लिखिए। (12)

अथवा

निबंध के तत्वों के आधार पर 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध की समीक्षा कीजिए।

4. 'चीनी-भाई' के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'वैष्णव की फिसलन' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (10×2=20)

(क) सारांश यह है की करुणा की प्राप्ति के लिए पात्र में दुःख के अतिरिक्त और किसी विशेषता की अपेक्षा नहीं। पर आनन्दित हम ऐसे ही आदमी के सुख को देख कर होते हैं जो या तो हमारा सुहृद या सम्बन्धी हो अथवा अत्यंत सज्जन, शीलवान या

चरित्रवान होने के कारण समाज का मित्र या हितकारी हो। यों ही किसी अज्ञात व्यक्ति का लाभ या कल्याण सुनने से हमारे हृदय में किसी प्रकार के आनंद का उदय नहीं होता। इससे प्रकट है की दूसरों के दुःख से दुखी होने का नियम बहुत व्यापक है।

(ख) धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुंझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा, धर्म ने उछल-उछल कर आक्रमण करने शुरू किए। एक से पांच, पांच से दस, दस से पंद्रह, और पंद्रह से बीस हजार तक नौबत पहुंची, किन्तु धर्म अलौकिक वीरता के साथ बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भांति अटल, अविचलित खड़ा था। अलोपीदीन निराश होकर बोले, "अब इससे अधिक मेरा साहस नहीं। आगे आपको अधिकार है।"

(ग) अपनी कथा सुनाने के लिए भी वह विशेष उत्सुक रहा करता था; पर कहने -सुनने वाले के बीच की खाई बहुत गहरी थी उसे चीनी और बर्मी भाषाएँ आती थी, जिनके सम्बन्ध में अपनी सारी विद्या-बुद्धि के साथ मैं 'आंखो के अंधे नाम नैनसुख' की कहावत चरितार्थ करती थी अंग्रेजी की क्रियाहीन संज्ञाएँ और हिंदुस्तानी की संज्ञाहीन क्रियाओं के सम्मिश्रण से जो विचित्र भाषा बनती थी उसमें कथा का सारा मर्म बंध नहीं पाता था पर जो कथाएं हृदय का बाँध तोड़कर दूसरों को अपना परिचय देने के लिए निकलती है, वे प्रायः करुण होती हैं।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :- (7)

(क) प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी

(ख) भारतेन्दु युग और नाटक

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No......

Sr. No. of Question Paper : 6014 **G**

Unique Paper Code : 62051312

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (2×7.8=15)

(क) दुःख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनंद-वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के नियम से विशेष रूप में दुःखी और कभी-कभी उस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान भी होते हैं। उत्साह में हम आने वाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय

P.T.O.

द्वारा प्रस्तुत कर्म-सुख की उमंग से अवश्य प्रयत्नवान होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्ति होने के आनंद का योग रहता है।

अथवा

इस बार की असफलता ने तो बस मुझे रुला ही दिया। अब तो इतनी हिम्मत भी नहीं रही कि एक बार फिर मध्यम वर्ग में अपना नेता उत्पन्न करके फिर प्रयास करती। इन दो हत्याओं की मार से ही मेरी गर्दन टूटी जा रही थी, और अधिक का पाप ढोने की इच्छा थी न शक्ति ही। और अपने सारे अहं को तिलांजलि देकर बहुत ही ईमानदारी से मैं कहती हूँ कि मेरा रोम-रोम महसूस कर रहा था कि कवि भरी सभा में ज्ञान के साथ जो नहला फटकार गया था उस पर इक्का तो क्या मैं दुग्गी भी न मार सकी। मैं हार गई, बुरी तरह हार गई।

(ख) एक टका दो, हम अभी अपनी जात बेचते हैं। टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जायँ और धोबी को ब्राह्मण कर दें। टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दें। टके के वास्ते झूठ को सच करें। टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिंदु से क्रिस्तान। टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचें, टके के वास्ते झूठी गवाही दें।

अथवा

मुझे मानव जाति की दुर्दम-निर्मल धारा के हजारों वर्ष का रूप साफ दिखाई दे रहा है। मनुष्य की जीवनी शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती बहाती यह जीवन धारा आगे बढ़ी है। संघर्षों से मनुष्य ने नई शक्ति पाई है। हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है। देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बाद की बात है। सबकुछ में मिलावट है, सबकुछ अविशुद्ध है।

2. 'कहानी' की विकास यात्रा का संक्षिप्त परिचय लिखिए। (12)

अथवा

'संस्मरण' की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए।

3. 'जुलूस' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। (12)

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

4. 'उत्साह' निबंध की विवेचना कीजिए। (12)

अथवा

'रहिमन पानी राखिए' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. 'अंधेर नगरी' नाटक में प्रस्तुत व्यंग्य की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'पीड़ों पर चाँदनी' यात्रा-वृत्तांत का सार लिखिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (12)

(क) एकांकी नाटक

(ख) आत्मकथा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 6015 **G**

Unique Paper Code : 62051313

Name of the Paper : Hindi : B

Name of the Course : **B.A. (Program)**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. उपन्यास के स्वरूप पर विचार करते हुए प्रेमचंदोत्तर उपन्यासो पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

हिंदी निबंध के विकास का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

2. 'बूढ़ी काकी' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'चीफ की दावत' कहानी की समीक्षा कीजिए।

3. 'सदाचार का ताबीज' निबंध के कथ्य को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'ठेले पर हिमालय' निबंध में लेखक द्वारा अभिव्यक्त सौंदर्यमयी दृष्टि का विश्लेषण कीजिए।

4. 'अंधेर नगरी' नाटक की प्रासंगिकता का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

महादेवी वर्मा के 'बिबिया' पात्र का चरित्र चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

5. किन्हीं 'दो' की व्याख्या कीजिए : (10+10)

(क) सेत सेत सम एक से, जहां कपूर कपास।
ऐसे देश कुदेस में कबहुँ न कीजै बास ।।
कोकिल बायस एक सम, पंडित मूरख एक।
इंद्रायन दाड़िम विषय, जहाँ न नेकु विवेक ।।
बसि ये ऐसे देस नहिं कनक-वृष्टि जो होय।
रहिए तो दुख पाइये प्रान, दीजिए रोय ।।

(ख) बरामदे में पहुंचते ही ज्ञाननाथ सहसा ठिठक गए। जो दृश्य उन्होंने देखा, उनकी टांगें लड़खड़ा गईं, और क्षण भर में सारा नशा हिरन होने लगा। बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर मां अपनी कुर्सी पर ज्यों की त्यों बैठी थी। मगर दोनों पांव कुर्सी की सीट पर रखे हुए, और सिर दाएं से बाएं और बाएं से दाएं झूल रहा था और मुंह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाजें आ रही थीं। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते और फिर जब झटके से नींद टूटती, तो सिर फिर दाएं से बाएं झूलने लगता। पल्ला सिर पर से खिसक आया था और मां के झड़े हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे।

(ग) संसार का जब यही रंग है तो ऊंट पर चढ़ने वाले सदा ऊंट ही पर चढ़े यह कुछ बात नहीं। किसी की पुरानी बात यों खोलकर कहने से आजकल के कानून से हतक-इज्जत हो जाती है। तुम्हें खबर नहीं कि अब मारवाड़ियों ने "एसोसिएशन" बना ली है। अधिक बलबलाओगे तो वह रिजोल्यूशन पास करके तुम्हें मार-धाड़ से निकलवा देंगे। अत: तुम उनका कुछ गुणगान

करो जिसे वह तुम्हारे पुराने हक को समझे और जिस प्रकार लॉर्ड कर्जन ने किसी जमाने के "ब्लैकहोल" को उस पर लाट बनवा कर और उसे संगमरमर से मंढवा कर शानदार बना दिया है उसी प्रकार मारवाड़ी तुम्हारे लिए मखमली काठी, जरी की गद्दियां, पत्रों की नकेल और सोने की घंटियां बनवा कर तुम्हें बड़ा करेंगे और अपने बड़ों की सवारी का सम्मान करेंगे।

6. निम्नलिखित किसी 'एक' पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(i) प्रेमचंदयुगीन कहानी

(ii) प्रसादोत्तर नाटक

(iii) रेखाचित्र

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2040 **G**

Unique Paper Code : 2051002003

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Takneek (Hindi-C)

Name of the Course : **Common Prog. Group – AEC**

Semester : III

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. ई-गवर्नेंस का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसमें हिन्दी के प्रयोग का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

अथवा

हिन्दी के प्रयोग ने वेब-डिजाइनिंग की दुनिया में एक नवीन युग का सूत्रपात किया है, स्पष्ट कीजिए। (15)

P.T.O.

2. कंम्प्यूटर ने राजभाषा हिन्दी को सुगम और सरल बनाकर जन-साधारण के साथ जोड़ दिया है।क्या आप इस कथन से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

अथवा

यूनिकोड क्या है? हिन्दी के संदर्भ में यूनिकोड का महत्त्व बताइए। (15)

3. हिन्दी की किसी एक प्रमुख वेबसाइट की भाषा का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

मशीनी अनुवाद से संबंधित प्रमुख सॉफ्टवेयर कौन-कौन से हैं, सूची बनाए। (15)

4. एस.एम.एस. ने भाषा-प्रयोग की दृष्टि से बहुत परिवर्तन किए हैं, कम से कम 5 उदाहरण देकर अपनी बात स्पष्ट कीजिए।

अथवा

रिसेप्शनिस्ट के तौर पर नौकरी के लिए कंम्प्यूटर पर आप अपना स्ववृत्त तैयार कीजिए। (15)

(1000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2059 **G**

Unique Paper Code : 2051002003

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Takneek (Hindi-C)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC**

Semester : III

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. डिजिटल युग में ई-गवर्नेंस का महत्त्व बताते हुए इसमें हिन्दी की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिन्दी के प्रयोग ने वेब-डिजाइनर के लिए रीडेबिलिटी को बढ़ाने में सहयोग किया है, स्पष्ट कीजिए। (15)

P.T.O.

2. राजभाषा के प्रचार और प्रसार में कंम्प्यूटर ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, इस कथन के पक्ष में तर्क सहित उत्तर दीजिए।

अथवा

यूनिकोड क्या है, हिन्दी कंम्प्यूटर में इसका क्या योगदान है? (15)

3. इंटरनेट पर उपलब्ध हिन्दी की प्रमुख पत्रिकाएं कौन-कौन सी हैं? उनकी सूची बनाएं।

अथवा

मशीनी अनुवाद से संबंधित प्रमुख सॉफ्टवेयर की सूची बनाएं। (15)

4. संदेश लेखन और एस.एम.एस. का अंतर स्पष्ट करते हुए कंम्प्यूटर पर इनके भाषा-प्रयोगों के उदाहरण दीजिए।

अथवा

प्राथमिक विद्यालय के लिए हिन्दी अध्यापक के रुप में अपना स्ववृत्त तैयार कीजिए। (15)

(1000)

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2826 **G**

Unique Paper Code : 2055002001

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (हिंदी गद्य उद्भव और विकास 'क')

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : III – GE (Generic Elective)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

P.T.O.

(ख) अनुभूति के द्वंद्व ही से प्राणी के जीवन का आरंभ होता है। उच्च प्राणी मनुष्य भी केवल एक जोड़ी अनुभूति लेकर इस संसार में आता है। बच्चे के छोटे से हृदय में पहले सुख और दुःख की सामान्य अनुभूति भरने के लिए जगह होती है। पेट का भरा या खाली रहना ही ऐसी अनुभूति के लिए पर्याप्त होता है। जीवन के आरंभ में इन्हीं दोनों के विरुद्ध हँसना और रोना देखे जाते हैं पर ये अनुभूतियाँ बिलकुल सामान्य रूप में रहती हैं, विशेष विशेष विषयों की ओर विशेष विशेष रूपों में ज्ञानपूर्वक उन्मुख नहीं होतीं।

अथवा

सोचते-सोचते लगा कि इस देश की ही नहीं, पूरे विश्व की एक कौसल्या है, जो हर बारिश में बिसूर रही है - 'मोरे राम के भीजै मुकुटवा' मेरी संतान, ऐश्वर्य की अधिकारिणी संतान वन में घूम रही है, उसका मुकुट, उसका ऐश्वर्य भीग

रहा है, मेरे राम कब घर लौटेंगे, मेरे राम के सेवक का दुपट्टा भीग रहा है, पहरुए का कमरबंद भीग रहा है, उसका जागरण भीग रहा है, मेरे राम की सहचारिणी सीता का सिंदूर भीग रहा है, उसका अखंड सौभाग्य भीग रहा है, मैं कैसे धीरज धरूँ?

(ग) आँधी में आग की लपट तेज ही होती है, सोना! तुम भी उसी आँधी में लड़खड़ाकर गिरोगी। तुम्हारे ये सारे नूपुर बिखर जाएँगे। न जाने किस हवा का झोंका तुम्हारे गीत की इन लहरों को निगल जायेगा। यह सुख और सुहाग पास-पास उठे हुए दो बुलबुलों की तरह बिना सूचना दिये फूट जाएगा। चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियां नहीं।

अथवा

(ख) अनुभूति के द्वंद्व ही से प्राणी के जीवन का आरंभ होता है। उच्च प्राणी मनुष्य भी केवल एक जोड़ी अनुभूति लेकर इस संसार में आता है। बच्चे के छोटे से हृदय में पहले सुख और दुःख की सामान्य अनुभूति भरने के लिए जगह होती है। पेट का भरा या खाली रहना ही ऐसी अनुभूति के लिए पर्याप्त होता है। जीवन के आरंभ में इन्हीं दोनों के विरुद्ध हँसना और रोना देखे जाते हैं पर ये अनुभूतियाँ बिलकुल सामान्य रूप में रहती हैं, विशेष विशेष विषयों की ओर विशेष विशेष रूपों में ज्ञानपूर्वक उन्मुख नहीं होतीं।

अथवा

सोचते-सोचते लगा कि इस देश की ही नहीं, पूरे विश्व की एक कौसल्या है, जो हर बारिश में बिसूर रही है - 'मोरे राम के भीजै मुकुटवा' मेरी संतान, ऐश्वर्य की अधिकारिणी संतान वन में घूम रही है, उसका मुकुट, उसका ऐश्वर्य भीग

रहा है, मेरे राम कब घर लौटेंगे, मेरे राम के सेवक का दुपट्टा भीग रहा है, पहरुए का कमरबंद भीग रहा है, उसका जागरण भीग रहा है, मेरे राम की सहचारिणी सीता का सिंदूर भीग रहा है, उसका अखंड सौभाग्य भीग रहा है, मैं कैसे धीरज धरूँ?

(ग) आंधी में आग की लपट तेज ही होती है, सोना! तुम भी उसी आंधी में लड़खड़ाकर गिरोगी। तुम्हारे ये सारे नूपुर बिखर जाएंगे। न जाने किस हवा का झोंका तुम्हारे गीत की इन लहरों को निगल जायेगा। यह सुख और सुहाग पास-पास उठे हुए दो बुलबुलों की तरह बिना सूचना दिये फूट जाएगा। चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियां नहीं।

अथवा

हमारे शैशवकालीन अतीत और प्रत्यक्ष वर्तमान के बीच में समय-प्रवाह का पाट ज्यों-ज्यों चौड़ा होता जाता है त्यों-त्यों हमारी स्मृति में अनजाने ही एक परिवर्तन लक्षित होने लगता है। शैशव की चित्रशाला के जिन चित्रों से हमारा रागात्मक संबंध गहरा होता है, उनकी रेखाएं और रंग इतने स्पष्ट और चटकीले होते चलते हैं कि हम वार्धक्य की धुंधली आंखों से भी उन्हें प्रत्यक्ष देखते रह सकते हैं। पर जिनसे ऐसा संबंध नहीं होता वे फीके होते-होते इस प्रकार स्मृति से धुल जाते हैं कि दूसरों के स्मरण दिलाने पर भी उनका स्मरण कठिन हो जाता है।

2. हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

हिंदी निबंध के विकास पर प्रकाश डालिए।

3. 'मलबे का मालिक' कहानी विभाजन की विभीषिका का दंश प्रस्तुत करती है। इस कथन के आलोक में इस कहानी के कथानक का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

'नमक का दारोगा' कहानी का उद्देश्य लिखिए।

4. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'भाव और मनोविकार' निबंध की विशेषताएँ लिखिए।

5. एकाँकी के तत्वों के आधार पर 'दीपदान' की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'सुभद्रा' संस्मरण के आधार पर सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन पर प्रकाश डालिए।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) रेखाचित्र का सामान्य परिचय

(ख) व्यंग्य विधा की विशेषताएँ

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 2827 **G**

Unique Paper Code : 2055002002

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (B)

Name of the Course : **B.A. Prog. Hindi-B GE**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) सामने शैलमाला की चोटी पर हरियाली में विस्तृत जल-देश में, नील पिंगल संध्या, प्रकृति की सहृदय कल्पना, विश्राम की शीतल छाया, स्वप्नलोक का सृजन करने लगी। उस मोहिनी के रहस्यपूर्ण नीलजाल का कुहक स्फुट हो उठा। जैसे मदिरा से सारा अंतरिक्ष

P.T.O.

सिक्त हो गया। सृष्टि नील कमलों में भर उठी उस सौरभ से पागल चंपा ने बुधगुप्त के दोनों हाथ पकड़ लिए। वहाँ एक आलिंगन हुआ, जैसे क्षितिज में आकाश और सिंधु का।

अथवा

बाहर बूँदाबाँदी होने लगी थी। कमरे की टीन की छत 'खट-खट' बोलने लगी। लतिका पलंग से उठ खड़ी हुईय बिस्तर को तहाकर बिछायाँ फिर पैरों में स्लीपरों को घसीटते हुए वह बड़े आइने तक आयी और उसके सामने स्टूल पर बैठकर बालों को खोलने लगी। किंतु कुछ देर तक कंघी-बालों में उलझी रही और वह गुमसुम सी शीशे में अपना चेहरा ताकती रही।

(ख) जीभ को दबाने और चौकसी रखने से यह प्रयोजन नहीं है कि हम सर्वथा मूक भाव धारण कर लें, किन्तु चुप रहने के भी मौके है। विद्यावृद्ध, वयोवृद्ध या संसार की अनेक ऊँची-नीची बातों के अनुभव में जो अपने से अधिक हैं उनके सामने शालीनता के ख्याल से चुप रहना होता है जिसमें यह कोई न समझे कि यह छोटे मुँह बड़ी बात कह रहा है। बहुत बकने वालों में कितने ऐसे है कि घंटों तक बक जाते है पर उनके बात करने का खास मतलब क्या था, कुछ समझ में नहीं आता।

अथवा

जब हम कभी वीरों का हाल सुनते हैं तब हमारे अंदर भी वीरता की लहरें उठती हैं और वीरता का रंग चढ़ जाता है। परन्तु वह चिरस्थायी नहीं होता। इसका कारण सिर्फ यही है कि हमारे

भीतर का मसाला तो होता नहीं। हम सिर्फ खाली महल उसके दिखलाने के लिये बनाना चाहते हैं। टीन के बर्तन का स्वभाव छोड़कर अपने जीवन के केन्द्र में निवास करो। सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। अपनी जिन्दगी किसी और के हवाले करो ताकि जिन्दगी के बचाने की कोशिशों में कुछ भी वक्त जाया न हो।

(ग) तो तुम देश के महत्त्व को नहीं समझी। तुम्हारे पिता, तुम्हारे दादा और तुम्हारी न जाने कितनी पीढ़ियों ने इस भूमि की रक्षा में अपना रक्त सींचा है, बहन। कितनी बहनों ने अपने भाइयों को रणभूमि में विसर्जित किया है, कितनी युवतियों ने यौवन के प्रभातकाल में पतियों को स्वर्ग का मार्ग दिखाया है। यह एक विजया या एक श्रीपाल का प्रश्न नहीं है- यह देश का प्रश्न है।

अथवा

यह सब अभ्यर्थना निस्स्वार्थ ही नहीं होती थी। सेवा करने वाले भक्तों में वे सभी एक-न-एक वरदान चाहते थे। किसी को बुढ़ौती में पुत्र चाहिए। किसी को और अधिक धन की आवश्यकता थी। कोई अपने पट्टीदार को हराना चाहता था। कोई अपने सगे भाई को विरक्त करने के लिए उच्चाटन मंत्र माँगता था। कोई किसी को वश में करने के साधन का जिज्ञासु था। कोई रेहन रखे हुए खेत को बिना रुपया चुकाये लौटाने का उपाय पूछता था।

2. कहानी के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

निबंध का सामान्य परिचय दीजिए।

3. आकाशदीप कहानी की नायिका चंपा की चारित्रिक विशेषतायें लिखिए। (15)

अथवा

नई कहानी के आधार पर 'परिन्दे' कहानी की समीक्षा कीजिए।

4. जवान निबंध के माध्यम से बालकृष्ण भट्ट क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

सच्ची वीरता निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. मालव प्रेम एकांकी के आधार पर विजया की चारित्रिक विशेषताएं लिखिए। (15)

अथवा

'गुंगिया के माध्यम से महादेवी वर्मा ने स्त्री की दुर्दशा का चित्रण किया है'। स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए -

(i) व्यंग्य

(ii) एकांकी के तत्व (6)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 2828 **G**

Unique Paper Code : 2055002003

Name of the Paper : हिन्दी गद्य: उद्भव और विकास (ग)
GE

Name of the Course : **B.A. Prog. Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) अब की भाई साहब बहुत कुछ नर्म पड़ गए थे। कई बार मुझे डांटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डांटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वछन्दता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास हो ही जाऊंगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ,

P.T.O.

मेरी तकदीर बलवान है; इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौवे उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी की ही भेंट होता था; फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नज़र बचाकर कनकौवे उड़ाता था।

अथवा

यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुंह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न रहा हो। बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूंज रहे थे। सोचता था कैसे ऊंचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाई खिल जाता था। कहते थे इसके बिना मैं रह न सकूँगा।

(ख) मेरी इस घायल पीठ को घृणा से न देखो इस पर तुम्हारे बड़े अन्न, रस्सियाँ यहाँ तक की उपले लादकर दूर-दूर तक ले जाते थे। जाते हुए मेरे साथ पैदल जाते थे और लौटते हुए मेरी पीठ पर चढ़े हुए हिचकोले खाते वह स्वर्गीय सुख लूटते थे कि तुम रबड़ के पहिये वाली चमड़े की कोमल गद्दियोंदार फिटिन में बैठकर भी वैसा आनंद प्राप्त नहीं कर सकते। मेरी बलबलाहट उनके कानों को इतनी सुरीली लगती थी कि तुम्हारे बगीचों में तुम्हारे गवैयों तथा तुम्हारी पसंद की बीबियों के स्वर भी तुम्हें उतने अच्छे न लगते होंगे।

अथवा

ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा । प्राणि-शास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि

मनुष्य का अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूंछ झड़ गई है। उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी। शायद उस दिन वह मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा या तब तक इस बात से छोटे बच्चों को परिचित करा देना वांछनीय जान पड़ता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है। बृहत्तर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों का बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बाढ़ को रोकना मनुष्यत्व का तकाज़ा है।

(ग) आज पीटता जरूर; लेकिन माफ कर दिया। वह मुस्करा पड़ी। बैठ गई। बैठिए उस गंदगी में क्यों बैठने लगा, झुककर देखने लगा। उसने कहना शुरू किया - यह है दूल्हा - सिर पर गौर सरसों के फूल की इशारा करती - बसंती भोर। यह दुल्हन कैसी भी चुंदरी, मटर बने, से फूलों की। इनकी होगी शादी। खूब बजेंगे बाजे। दो-तीन बार उससे पेट पीटा, फिर मुंह से सीटी दी - ढोल भी : शहनाई भी! यह कोहवर पर धूल से चौकोर पैर कर बनाया। यह है फूलसेज- आम के हरे पत्तों पर कुछ फूल बिखेर। इस पर सोएँगे दोनों। और मैं गाऊँगी गीत-

अथवा

नारद समझे कि साहब कुछ ऊंचा सुनता है। इसलिए जोर से बोले- "भोलाराम।" सहसा फाइल में से आवाज आई - "कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है? क्या पेंशन का ऑर्डर आ गया? नारद चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गए। बोले - "भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो?"

"हाँ!", आवाज आई।

नारद ने कहा- "मैं नारद हूँ। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो, स्वर्ग में तुम्हारा इंतजार हो रहा है।" आवाज आई- "मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता।"

2. संस्मरण की विधागत विशेषताएँ बताइए। (15)

अथवा

निबंध विधा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

3. 'बड़े भाई साहब' कहानी के मूल भाव को स्पष्ट कीजिये। (15)

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'हार की जीत' कहानी की समीक्षा कीजिये।

4. 'मेले का ऊँट' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए। (15)

अथवा

'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध की मूल संवेदना का सारगर्भित विश्लेषण कीजिये।

5. 'बुधिया' पाठ रेखाचित्र विधा का निकष है- इस कथन के आधार पर 'बुधिया' रेखाचित्र की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'भोलाराम का जीव' व्यंग्य की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) व्यंग्य

(ख) एकांकी

(2000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2829 **G**

Unique Paper Code : 2055092001

Name of the Paper : Hindi Gadya Vikas ke Vividh Charan (A)

Name of the Course : **B.Com. Prog. GE**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. (क) दिलफिगार इन्हीं खयालों में चक्कर खा रहा था और अक्ल कुछ काम नहीं करती थी मुनीर शामी को हातिम-सा मददगार मिल गया। ऐ काश-, कोई मेरा भी मददगार हो जाता। ऐ काश! मुझे भी उस चीज का, जो दुनिया की सबसे बेशकीमती चीज है, नाम बतला दिया जाता। वह चीज हाथ न आती मगर इतना तो मालूम हो जाता कि वह किस किस्म की चीज है। मैं घंटे

P.T.O.

बनकर मोती की खोज में जा सकता हूं। मैं समुन्दर का गीत, पत्थर का दिल, मौत की आवाज और इनसे भी ज्यादा बेनिशान चीज़ों की तलाश में कमर कस सकता हूं; मगर यह दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ मेरी कल्पना की उड़ान से बहुत ऊपर है।

अथवा

बहुत दिनों के बाद बाज़ारों में तुर्रेदार पगड़ियां, लाल तुर्की टोपियां नज़र आ रही थीं। लाहौर से आए मुसलमानों में काफी संख्या ऐसे लोगों की थी जिन्हें विभाजन के समय मजबूर होकर अमृतसर से जाना पड़ा था। साढ़े सात साल में आए अनिवार्य परिवर्तनों को देखकर कहीं उनकी आंखों में हैरानी भर जाती और कहीं अफसोस घिर आता। वल्लाह! कटरा जयमल सिंह इतना चौड़ा कैसे हो गया?- क्या इस तरफ के सब-के-सब मकान जल गए थे?_ यहां हकीम आसिफ अली की दुकान थी न? अब यहां एक मोची ने कब्जा कर रखा है?

(ख) दुःख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनंद वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के निश्चय से विशेष रूप में दुःखी और कभी-कभी स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान भी होते हैं। उत्साह में हम आने वाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म-सुख की उमंग से अवश्य प्रयत्नवान होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्त होने के आनंद का योग रहता है। साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं।

अथवा

आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है। इस भाषा का नियम शुद्ध श्वेत पत्रों वाला है। इसमें नाम मात्र के लिए भी शब्द नहीं। यह सभ्याचरण नाद करता हुआ भी मौन है, व्याख्यान देता हुआ भी व्याख्यान के पीछे छिपा है, राग गाता हुआ भी राग के सुर के भीतर पड़ा है। मृदु वचनों की मिठास में आचरण की सभ्यता मौन रूप से घुली हुई है। नम्रता, दया, प्रेम और उदारता सबके सब सभ्याचरण की भाषा के मौन व्याख्यान हैं। मनुष्य के जीवन पर मौन व्याख्यान का प्रभाव चिरस्थायी होता है और उसकी आत्मा का एक अंग हो जाता है।

(ग) दूत ने सिर झुकाकर कहा- "महाराज! आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ चीज़ें भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। मालगाड़ी के होज़री के पार्सलों के मोज़े रेलवे के अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद खराबी करने के लिए तो नहीं उड़ा दिया?"

अथवा

पन्ना: ओह! क्रूर बनवीर! तुम तो उदयसिंह के संरक्षक थे। रक्षा के बदले क्या तुम उनकी हत्या करोगे? नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता। महाराणा बनवीर! तुम राज करो चित्तौड़ पर, मेवाड़ पर, सारे राजपूताने पर राज करो। पर कुंवर उदय सिंह को छोड़ दो।

मैं उसे लेकर संन्यासिन हो जाऊंगी। तीर्थों में वास करूंगी। तुम्हारा मुकुट तुम्हारे माथे पर रहे, पर मेरा कुंवर भी मेरी गोद में रहे। बनवीर! महाराणा बनवीर, मुझे यह भिक्षा दे दो।

(8×3=24)

2. हिंदी कहानी के विकास पर संक्षिप्त निबंध लिखिए।

अथवा

रेखाचित्र और संस्मरण की परिभाषा देते हुए उसकी विशेषताएं बताइए। (15)

3. कहानी के तत्वों के आधार पर 'अनमोल रतन' कहानी की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'नलबे का नालिक' कहानी का सार लिखिए। (15)

4. शिल्प की दृष्टि से 'उत्साह' निबंध का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

5. 'दीपदान' एकांकी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

व्यंग्य विधा के आधार पर 'भोलाराम का जीव' का विश्लेषण कीजिए। (15)

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) एकांकी

(ख) रेखाचित्र

(1500)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2830 **G**

Unique Paper Code : 2055092002

Name of the Paper : हिंदी गद्य विकास के विविध चरण (ख)

Name of the Course : **B.Com. (Prog.) GE Hindi/III**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **तीन** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) "मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ, मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादुर का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है, आज नमक - हलाली का मौका आया है। पर सरकार ने तीमियों की घघरिया पलटन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदार जी के साथ चली जाती? एक बेटा है, फ़ौज

P.T.O.

में भरती हुए उसे एक ही वर्ष हुआ। उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी ना जिया।"

अथवा

"मज़दूरी करना जीवन-यात्रा का आध्यात्मिक नियम है। जोन ऑफ आर्क की फ़कीरी और भेड़ें चराना, तालस्टॉय का त्याग और जूते गाँठना उमर खैयाम का प्रसन्नतापूर्वक तम्बू सीते फिरना, ख़लीफ़ा उमर का अपने रंगमहलों में चटाई आदि बुनना, ब्रह्मज्ञानी कबीर और रैदास का शुद्र होना, गुरु नानक और भगवान कृष्ण का मूक पशुओं को लाठी लेकर हाँकना सच्ची फ़कीरी का अनमोल भूषण है।"

(ख) बेटा बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं - बड़प्पन तो मन का होना चाहिए। और फिर बेटा घृणा को घृणा से से नहीं मिटाया जा सकता, बहू तभी पृथक होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जाएगी। लेकिन यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिले तो उसकी सारी घृणा धुँधली पड़कर लुप्त हो जाएगी। और महानता भी बेटा, किसी से मनवाई नहीं जा सकती, अपने व्यवहार से अनुभव कराई जा सकती है। ठूँठ वृक्ष आकाश को छूने पर भी अपने महानता का सिक्का हमारे दिलों पर उस समय तक नहीं बैठा सकता, जब तक अपनी शाखाओं में वह ऐसे पत्ते नहीं लाता, जिनकी शीतल- सुखद छाया मन के सारे ताप को हर ले और जिसके फूलों की भीनी-भीनी सुगंध हमारे प्राणों में पुलक भर दे।

अथवा

"शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे घर का सब संचालन उनके हाथ में था खूँटियाँ कमरों में कहाँ लगाई जाएँ, बिस्तर कहाँ पर बिछे, किस रंग के पर्दे लगाए जाएँ, श्रीमती कौन सी साड़ी पहनें, मेज किस साइज़ की हो..। शामनाथ की चिंता थी कि अगर चीफ का साक्षात् माँ से हो गया, तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े।"

(ग) "केवल उसके स्वभाव में अभिमान की मात्रा इतनी थी कि वह दोष की सीमा तक पहुँच जाती थी। ...गहने भी उसकी माँ ने कम नहीं छोड़े थे। विवाह संबंध उसके जन्म के पहले ही निश्चित हो गया था। पाँचवे वर्ष में ब्याह भी हो गया पर गौने से पहले ही वर की मृत्यु ने उस संबंध को तोड़कर जोड़ने वालों का प्रयत्न निष्फल कर दिया। ऐसे परिस्थिति में जिस प्रकार उच्च वर्ग की स्त्री का गृहस्थी बसा लेना कलंक है, उसी प्रकार नीच वर्ग की स्त्री का अकेला रहना सामाजिक अपराध है।"

अथवा

"... माई लार्ड को ड्यूटी का ध्यान दिलाना सूर्य को दीपक दिखाना है। वह स्वयं श्रीमुख से कह चुके हैं कि ड्यूटी से बंधा हुआ मैं इस देश में फिर आया, यह देश मुझे बहुत ही प्यारा है। इससे ड्यूटी और प्यार की बात श्रीमान के कथन से ही तय हो जाती है उसमें किसी प्रकार की हुज्जत उठाने की ज़रूरत नहीं। तथापि यह प्रश्न आपसे से आप जी में उठता है कि इस देश की प्रजा से प्रजा के लोगों की बात जानना भी उस ड्यूटी

की सीमा तक पहुँचा है या नहीं? यदि पहुँचा है, तो क्या श्रीमान बता सकते हैं कि अपने छः साल के लंबे शासन में इस देश की प्रजा का क्या जाना और उससे क्या संबंध उत्पन्न किया?"

2. कहानी विधा का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

निबंध विधा के बारे में एक लेख लिखिए।

3. "लहना सिंह" का चरित्र-चित्रण कीजिए। (15)

अथवा

'चीफ़ की दावत' कहानी में मध्यम वर्ग के चरित्र के बारे में लिखिए।

4. 'एक दुराशा' निबंध का सार लिखिए। (15)

अथवा

'सरदार पूर्णसिंह' द्वारा लिखित 'मजदूरी और प्रेम' निबंध की समीक्षा कीजिए।

5. 'बीबिया' की सामाजिक स्थिति के बारे में लिखिए। (15)

अथवा

'सूखी डाली' एकांकी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

6. निम्नलिखित में से **किसी एक** पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) 'उसने कहा था' कहानी में चित्रित प्रेम

(ख) 'सूखी डाली' में छोटी बहू का चरित्र चित्रण

(1500)

03

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 2831 **G**

Unique Paper Code : 2055092003

Name of the Paper : Hindi Gadya Vikas ke Vividh Charan

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8+8+8=24)

P.T.O.

(क) झूरी के पास दो बैल थे - हीरा और मोती। देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक भाषा में विचार-विनिमय किया करते थे। एक-दूसरे के मन की बात को कैसे समझा जाता है, हम कह नहीं सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे, विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोनों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफसी, कुछ हल्की-सी रहती है, फिर ज़्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता।

अथवा

धीरे-धीरे वह घर के सारे काम करने लगा। सबेरे ही उठकर वह बाहर नीम के पेड़ से दातून तोड़ लाता था। वह हाथ का सहारा लिए बिना कुछ दूर तक तने पर दौड़ते हुए चढ़ जाता। मिनट भर में वह पेड़ की पुलई पर नज़र आता। निर्मला छाती पीटकर कहती थी - अरे रीछ-बंदर की जात, कहीं गिर गया तो बड़ा बुरा होगा। वह घर की सफाई करता, कमरों में पोंछा लगाता, अंगीठी जलाता, चाय बनाता और पिलाता। दोपहर में कपड़े धोता और बर्तन मलता। वह रसोई बनाने की भी ज़िद्द करता, पर निर्मला स्वयं सब्ज़ी और रोटी बनाती। निर्मला की उसको बहुत फिक्र रहती थी। उसकी उन दिनों तबीयत ठीक नहीं रहती थी, इसलिए वह कुछ दबा ले रही थी। बहादुर उसको कोई काम करते देखकर कहता था - 'माता जी, मेहनत न करो, तकलीफ बढ़ जाएगा'। वह कोई भी काम करता होता, समय होने पर हाथ धोकर भानु की तरह दौड़ता हुआ कमरे में

जाता और दवाई का डिब्बा निर्मला के सामने लाकर रख देता। जब मैं शाम को दफ्तर से आता तो घर के सभी लोग मेरे पास आकर दिन भर के अपने अनुभव सुनाते थे।

(ख) सच्चे वीर पुरुष धीर, गम्भीर और आज़ाद होते हैं। उनकी मन की गम्भीरता और शांति समुद्र की तरह विशाल और गहरी या आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है। वे कभी चंचल नहीं होते। रामायण में वाल्मीकि जी ने कुंभकर्ण की गहरी नींद में वीरता का एक चिह्न दिखलाया है। सच है, सच्चे वीरों की नींद आसानी से नहीं खुलती।

अथवा

कबीरपंथ की ही यह हालत हो, ऐसा नहीं है। अनेक महान धर्म तक जाति-पाँति के दकोसलों, चूल्हा चाकी के निरर्थक विधानों और मंत्र यंत्र के क्लांतिकर टोटकों में पर्यवसित हो गए हैं। विषय

में कोई बात तक कहना पसंद नहीं किया, परंतु उनका प्रवर्तित विशाल धर्म-मत मंत्र यंत्र में समाप्त हो गया। यह नहीं जनता में धर्म गुरुओं के प्रति श्रद्धा नहीं है। श्रद्धा का अतिरेक ही तो सर्वत्र पाया जाता है। कबीरदास ने अवतारों और पैगंबर शब्दों में निंदा की।

(ग) राना के संकीर्ण माथे पर की खूब घनी भौंहें और छोटी-छोटी स्नेहतरल आंखें कभी-कभी स्मृति-पट पर अंकित हो जाती हैं और कभी धुंधली होते-होते एकदम खो जाती हैं। किसी थके झुंझलाए शिल्पी की अन्तिम भूल जैसी अनगढ़ मोटी नाक, सांस के प्रवाह से फैले हुए-से-नथुने, मुक्त हंसी से भरकर फूले हुए-से ओठ तथा काले पत्थर की प्याली में दही की याद दिलाने वाली सघन और सफेद दन्त-पंक्ति के सम्बन्ध में भी वही सत्य है।

P.T.O.

अथवा

बच्चों से उसकी वितृष्णा क्यों हुई? शायद इसीलिए तो नहीं कि उसे जो एक भी बच्चा नसीब न हुआ, वह कमाऊ पूत बनने के पहले ही, उसे दगा देकर चल बसा और जो उसकी एक बच्ची भी, सो, लूलीय जिसकी शादी में उसने इतनी दरियादिली दिखाई, लेकिन, एक बार मुसीबत काटने उसके दरवाजे पहुँचा, तो दामाद ने ऐसी बेरुखी दिखलाई कि मंगर का स्वाभिमान उसे वहां से ज़बरदस्ती भगा लाया।

2. कहानी का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

निबंध का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

3. 'दो बैलों की कथा' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

'बहादुर' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'घर जोड़ने की माया' निबंध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'सच्ची वीरता' निबंध की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

5. 'मंगर' बेनीपुरी जी का जीता-जागता शब्दचित्र है - इसका युक्ति संगत उत्तर दें। (15)

अथवा

महादेवी वर्मा कृत 'रामा' की मूल संवेदना लिखिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं एक पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) संस्मरण

(ख) झूरी का चरित्र-चित्रण

(300)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 6271 **G**

Unique Paper Code : 62054306

Name of the Paper : हिन्दी कथा साहित्य

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline – CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) "रमा को इस समय अपने कपट- व्यवहार पर बड़ी ग्लानि हो रही थी। जालपा ने प्रेमोल्लसित नेत्रों से उसकी ओर देखा, तो उसने मुँह फेर लिया। उन सरल विश्वास से भरी हुई आंखों के सामने वह ताक न सका। उसने सोचा- मैं कितना बड़ा कायर

P.T.O.

हूँ। क्या मैं बाबूजी को साफ-साफ जवाब न दे सकता था? क्या जालपा से घर की दशा साफ-साफ कह देना मेरा कर्तव्य न था? उसकी आंखें भर आयीं। जाकर मुंडेर के पास खड़ा हो गया। प्रणय के उस निर्मल प्रकाश में उसका मनोविकार किसी भयंकर जन्तु की भाँति घूरता हुआ जान पड़ता था। उसे अपने ऊपर इतनी घृणा हुई कि एंक बार जी में आया सारा कपट- व्यवहार खोल दूं, लेकिन संभल गया कितना भयंकर परिणाम होगा। जालपा की नज़रों से गिर जाने की कल्पना ही उसके लिए असह्य थी।"

अथवा

"रामेश्वरी ने अपनी मनोव्यथा छिपाने के लिए सिर झुका लिया। जिसका सारा जीवन गृहस्थी की चिंताओं में कट गया हो, वह आज क्या स्वप्न में भी इन गहनों को पहनने की आशा कर सकती थी? आह! दुखिया के जीवन की साथ ही न पूरी हुई। पति की आय ही कभी इतनी ना हुई कि बाल-बच्चों के पालन पोषण के उपरांत कुछ बचता। जब से घर की स्वामिनी हुई, तभी से मानों उसकी तपश्चर्या का आरम्भ हुआ और सारी लालसाएँ एक-एक करके धूल में मिल गईं। उसने उन आभूषणों की ओर से आँखें हटा लीं। उनमें इतना आकर्षण था कि उनकी ओर ताकते हुए वह डरती थी। कहीं उसकी विरक्ति का पर्दा ना खुल जाए।"

(ख) "मनुष्य की भावनाएं बड़ी विचित्र होती हैं। निर्जन, एकांत स्थान में निस्संग होने पर भी कभी-कभी आदमी एकाकी अनुभव नहीं करता। लगता है इस एकाकीपन में भी सब कुछ कितना निकट है, कितना अपना है। परंतु इसके विपरीत कभी-कभी सैकड़ों नर-नारियों के बीच जनरवमय में वातावरण में रहकर भी सूनेपन की अनुभूति होती है खलगता है जो कुछ है वह पराया है, कितना अपनत्वहीन! पर यह अकारण ही नहीं होता। इस एकांकीपन की अनुभूति, इस अलगाव की जड़े होती हैं- विछोह या विरक्ति की किसी कथा के मूल में।"

अथवा

"उसे ठंडा और गरम एक साथ खाना भला लगता है। कहते हैं, दांत खराब हो जाते हैं। कितना चटपट काम हो गया आज। राजन रहता है तो बढ़िया जगह बैठकर आराम से खाने की सूची देखने के बाद सोच विचार कर आदेश दिए जाते हैं। खाकर बाहर निकली तो सोचा, पास किसी सिनेमा घर में पिक्चर देख ली जाए। किस्मत से अंग्रेजी की पुरानी मजाकिया पिक्चर लगी मिल गई। डैनी के की। राजन कहता है- न जान तुम्हें कैसे डैनी के पसंद है। मुझे तो उसके बचपने पर भी हंसी नहीं आती। पर उसे आती है... कभी-कभी बेबात आती है, जैसे आज।"

2. 'गबन' उपन्यास में चित्रित सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

'गबन' उपन्यास के आधार पर जालपा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

3. 'उपन्यास आधुनिक युग का महाकाव्य है।' उक्ति के आधार पर उपन्यास के स्वरूप पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'उपन्यास' की परिभाषा देते हुए उसके तत्वों का विश्लेषण कीजिए।

4. आधुनिक कहानी के विकास पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

कहानी के स्वरूप और संरचना पर प्रकाश डालिए।

5. 'परदा' कहानी में मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक विसंगतियों और क्रूर विडम्बनाओं को गहराई से उठाया है। समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'दाज्यू' कहानी समाज में मध्यवर्ग की दोहरी मानसिकता को बेनकाब करती है। स्पष्ट कीजिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) 'हरी बिंदी' कहानी का मूल कथ्य

(ख) 'रोज' कहानी की मूल संवेदना

(ग) 'गबन' उपन्यास की शिल्पगत विशेषताएँ

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 847 **G**

Unique Paper Code : 2052202301

Name of the Paper : Hindi Katha Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10×3=30)

(क) देव! यह मेरे पितृ-पितामहों की भूमि है। इसे बेचना अपराध है; इसीलिए मूल्य स्वीकार करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है। महाराज के बोलने से पहले ही वृद्ध मंत्री ने तीखे स्वर में कहा- अबोध! क्या बक रही है? राजकीय अनुग्रह का तिरस्कार! तेरी भूमि से चौगुना मूल्य है; फिर कौशल का तो सुनिश्चित राष्ट्रीय नियम है। तू आज से राजकीय रक्षण पाने की अधिकारिणी हुई, इस धन से अपने को सुखी बना।

P.T.O.

अथवा

राजपूत का खून तो युद्ध और शत्रु के भय से कभी इतना ठंडा नहीं होता। राजपूत तो एक बार पुलकित कलेवर हो- जय! एकलिंग की जय!! बोलकर रक्त की उष्ण गंगा में बूड़ पड़ता है, प्रलय तांडव करने लगता है। इस पुण्य देश के रक्षक राजपूतों का गर्म रक्त जब ऐसा ठंडा पड़ जाएगा तब यह हरी-भरी सुंदरी, प्यारी वसुंधरा परायों के अत्याचार और व्यभिचार-तांडव का क्षेत्र बन जाएगी।

(ख) लेटे हुए वे घर के अंदर से आते विविध स्वरों को सुनते रहे। बहू और सास की छोटी-सी झड़प, बालटी पर खुले नल की आवाज, रसोई के बरतनों की खटपट और उसी में दो गौराइयों का वार्तालाप - और अचानक ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब घर की किसी बात में दखल न देंगे। यदि गृह स्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह नहीं है तो यहीं पड़े रहेंगे। अगर कहीं और डाल दी गई तो वहाँ चले जाएंगे।

अथवा

रात घनी हो आती थी। तब वे सो जाते थे। सुबह उठकर आँगन में कुछ वरजिश कर लेते थे कि शरीर ठीक रहे, बाकी दिन कोठरी में बैठे कभी कंकणों से खेलते, कभी आँगन की दीवार पर बैठने वाली गौरैया देखते, कभी दूर से कबूतर की गुटर-गूं सुनते- और कभी सामने के कोने से शेखजी के घर के लोगों की बातचीत भी सुन पड़ती।

(ग) हमें यह सुनकर अचंभा होता है लेकिन अन्य देश वालों के लिए नाक-कान का छिदना कुछ कम अचम्भे की बात ना होगी। बुरा मरज है बहुत ही बुरा। वह धन जो भोजन में स्वर्थ होना चाहिए, बाल बच्चों का पेट काटकर गहनों की भेंट कर दिया जाता है। बच्चों को दूध न मिले न सही। घी की गंध तक उनकी नाक में न पहुंचे, न सही। मेवों और फलों के दर्शन उन्हें न हो, कोई परवा नहीं; पर देवीजी गहने जरूर पहनेंगी और स्वामीजी गहनें जरूर बनवायेंगे।

अथवा

रमा के मनोल्लास की इस समय सीमा न थी, किन्तु यह विशुद्ध उल्लास न था, इसमें एक शंका का भी समावेश था। यह उस बालक का आनंद न था जिसने माता से पैसे मांगकर मिठाई ली हो; बल्कि उस बालक का, जिसने पैसे चुराकर ली हो। उसे मिठाइयाँ मीठी तो लगती हैं; पर दिल काँपता रहता है कि कहीं घर चलने पर मार न पड़ने लगे।

2. कहानी के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उसकी तात्विक समीक्षा कीजिये।

अथवा

उपन्यास के स्वरूप को समझते हुए उसकी संरचना की समीक्षा कीजिये।

(18)

3. 'पुरस्कार' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

अथवा

'ऐसी होली खेलों लाल' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिये। (14)

4. उषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।

अथवा

''शरणदाता' कहानी विभाजन की त्रासदी से युक्त है'- कथन की पुष्टि कीजिए। (14)

5. 'गबन' उपन्यास का सारांश बताते हुए उसमें निहित उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'जालपा' की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (14)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 571 **G**

Unique Paper Code : 2052102302

Name of the Paper : Hindi Natak Evam Ekanki
हिन्दी नाटक एवं एकांकी

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10×3=30)

(क) कोऊ नहीं पकरत मेरो हाथ।
बीस कोटि सुत होत फिरत मैं हा हा होय अनाथ॥
जाकी सरन गहत सोइ भारत सुनत न कोउ दुखगाथ॥
दीन बन्धो इत सों उत डोलत टकरावत निज माथ।
दिन-दिन बिपति बढ़त सुख छीजत देत कोऊ नहिं साथ।
सब बिधि दुख सागर में डूबत धाइ उबारो नाथ॥

P.T.O.

अथवा

फूट बैर और कलह बुलाऊं, ल्याऊँ सुस्ती जोर।
घर-घर में आलस फैलाऊँ, छाऊँ दुख घनघोर ।। मुझे..
काफिर काला नीच पुकारें, तोड़ूँ पैर और हाथ।
दूँ इनको संतोष खुशामद, कायरता भी साथ ।। मुझे..
मरी बुलाऊँ देस उजाड़ूँ, महँगा करके अन्न।
सबके ऊपर टिकस लगाऊँ, धन है मुझको धन्न ।।
मुझे तुम सहज न जानो जी, मुझे इक राक्षस मानो जी ।।

(ख) मेरी रक्षा करो। मेरे और अपने गौरव की रक्षा करो। राजा, आज मैं शरण की प्रार्थिनी हूँ। मैं स्वीकार करती हूँ, कि आज तक मैं तुम्हारे विलास की सहचरी नहीं हुई, किन्तु वह मेरा अहंकार चूर्ण हो गया है। मैं तुम्हारी होकर रहूँगी। राज्य और सम्पत्ति रहने पर राजा को, पुरुष को बहुत-सी रानियाँ और स्त्रियाँ मिलती हैं, किन्तु व्यक्ति का मान नष्ट होने पर फिर नहीं मिलता।

अथवा

विवाह की विधि ने देवी ध्रुवस्वामिनी और रामगुप्त को एक भ्रान्तिपूर्ण बन्धन में बाँध दिया है। धर्म का उद्देश्य इस तरह पद दलित नहीं किया जा सकता। माता और पिता के प्रमाण के कारण से धर्म-विवाह केवल परस्पर द्वेष से टूट नहीं सकते; परन्तु यह सम्बन्ध उस प्रमाणों से भी विहीन है। और भी (रामगुप्त

को देखकर) यह रामगुप्त मृत और प्रव्रजित तो नहीं, पर गौरव से नष्ट, आचरण से पतित और कर्मों से राजकिल्बिषी क्लीव है। ऐसी अवस्था में रामगुप्त का ध्रुवस्वामिनी पर कोई अधिकार नहीं।

(ग) सोते में विकराल हाथों की लौह-जकड़ और जागते में यमवाहन की चीत्कार-सा चंगीरव। यह कैसी यातना है- न सोते चौन, न जागते शान्ति। जीते हुए मृत्यु और मृत्युमय जीवन। सोने और जागने का अन्तर मिट गया। जीवन और मृत्यु की अन्तरेखा धुँधली पड़ती जा रही है। और धुँधल के में रूप ले रहे हैं- कुछ प्रश्न। मूर्तिमान प्रश्न-क्या हर अत्याचार आत्मयंत्रण है? क्यों हर हत्या आत्महत्या है?

अथवा

यदि मैं बचपन ही से ऐसे वातावरण में पली हूँ जहाँ सफाई और सलीके का बेहद ख्याल रखा जाता है तो इसमें मेरा क्या दोष? वे सफल और व्यवस्था की मेरी इच्छा को घृणा बताते हैं। मैं बहुतेरा यत्न करती हूँ कि इस सब सफाई-वफाई को छोड़ दूँ, इन तकल्लुफात को तिलांजलि दे दूँ, पर अपने इस प्रयास में कभी-कभी मुझे अपने आपसे घृणा होने लगती है। बचपन से जो संस्कार मैंने पाये हैं उनसे मुक्ति पाना मेरे लिए उतना आसान नहीं। पर नहीं। मैं इन सब बहमों को छोड़ दूँगी। पुरानी आदतों से छुटकारा पा लूँगी। वे समझते हैं, मैं उनसे नफ़रत करती हूँ।

2. 'भारत दुर्दशा' नाटक के आधार पर भारतेन्दुयुगीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

रंगमंच की दृष्टि से 'भारत दुर्दशा' नाटक की समीक्षा कीजिए?

3. "'ध्रुवस्वामिनी' एक स्त्री विमर्श का नाटक है" -- इस कथन की पुष्टि कीजिए? (15)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर चन्द्रगुप्त की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए?

4. 'कथा एक कंस की' नाटक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

"'कथा एक कंस की' मंचन की दृष्टि से सफल नाट्य कृति है"- इस कथन की समीक्षा कीजिए?

5. 'उत्सर्ग' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

'तौलिये' एकांकी की तात्विक समीक्षा कीजिए?

(3)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 943 **G**

Unique Paper Code : 2052202302

Name of the Paper : Janpadiye Sahitya (Loknatya Vishesh) (DSC-6)

Name of the Course : **B.A. Program Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) वेद रीत और हवन कुण्ड एक श्रेष्ठ सा घर चाहिए सै,
इंद्रजीत पराक्रमी जैसा पिता मेरे को वर चाहिए सै,
मात-पिता की सेवा करके चरणां में सिर धरता हो,
सम - दम उपरम सात धाम कुछ संयम व्रत भी करता हो,
अग्नि होत्तर पाँच महायज्ञ ओ३म का नाम सुमरता हो,
तीन काल और संध्या तर्पण में मन इधर उधर ना फिरता हो,
किरसन जैसा योगी हो, अर्जुन सा नर चाहिए सै ।।

P.T.O.

अथवा

तेरा दिल किसे तरियां ना हाल्या, मनै सांस सबर का घाल्या,
जिब मेरे पति ने ले कै चाल्या, किस तरियां मेरै लाल होगा,
जती मर्द बिन सती वीर कै, काहो पुत्र किस ढाल होगा,
सब के घर में थारी दया तै, दिया हुआ धनमाल होगा,
मेरा खोटा मता नहीं था, मैं रहया तने सता नहीं था
पहलम तै मनै पता नहीं था, तेरा धर्म कपट का जाल होगा ।।

(ख) अइलऽ कलकातावा त खलवा भेजइतऽ ताबर हो तोर ।
रोपेया भेजइतऽ मनीआडर से, गँइयाँ में होइत हो सोर ।।
रापेया खोंइछवा में लेइ कर, गुनवाँ गइती हो तोर ।
दुअरा पर रहितऽ त केहू नाहीं देखित करिया-गोर ।।
सुनरी का लोरवा से चुनरी होखत बा सर हो बोर ।।
कहत 'भिखारी' चेतऽ अबहूँ से, करत बानी निहोर ।।

अथवा

पिया मोर, गति जा हो पुरुबवा ।
पुरब देस में टोना बेसी बा, पानी बहुत कमजोर । पिया मोर....
सुनत बानी अँरय पानी देत बा, सारी भइल सरबोर । पिया मोर....
एक नाथ बिन मन अनाथ रहीं, घुसी महल में चोर । पिया मोर
कहत भिखारीऽ हमारी ओर देखिऽ, कतिना करीं निहार? पिया मोर

(ग) माया अपरमपार गुरुजी थांकी माया अपरमपार ।।
अपरम पारहे माया आपकी, झून्टो जगबे वार ।।
देखी माया मन हरसाया, कैसे करूँ सतकार ।।
चमत्कार देखि ने चित्यो, पोंच्यो हात हजार ।।
हिरदा बीच हुदो उजवाली जागी जोत अपार ।
जो मन थो केई दन से मेलो, चढ़-चढ़ बिसे बिकार
मल-मल धोय हुवो है उजलो, सतगुरु निमल धार ।।

अथवा

भेद भरी चोपड़ की चाल के, दो राणी समजाय ।।
मन की बात मन में तम राखो, म्हारी समज नी आय ।।
सत्त धरम की चोपड ऊपर, काम क्रोध की गोट ।।
प्रेम से पासा फैंको पियाजी, चले चोट पे चोट ।।

2. लोकनाट्य परम्परा के सन्दर्भ में 'रामलीला' के उद्भव और विकास को रेखांकित कीजिए । (15)

अथवा

माच लोकनाट्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताएँ लिखिए ।

3. 'सत्यवान सावित्री' सांग की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'सत्यवान सावित्री' सांग में सावित्री और यमराज के मध्य हुए वार्तालाप का वर्णन कीजिए।

4. 'बिदेसिया में वर्णित पलायन की समस्या आज भी प्रासंगिक है।' इस कथन पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

बिदेसिया में वर्णित विरह की पीड़ा का विश्लेषण कीजिए।

5. 'राजयोगी भरथरी' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (15)

अथवा

'राजयोगी भरथरी' साच की मूल संवेदना लिखिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 2039 **G**

Unique Paper Code : 2051002002

Name of the Paper : Jansanchar aur Rachnatmak Lekhan(Hindi B)

Name of the Course : **Common Prog. Group AEC 2**

Semester/Annual : III

सेमेस्टर/वार्षिक

Duration : 2 Hours — Maximum Marks : 60

समय : 2 घण्टे — पूर्णांक : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. रचनात्मक लेखन से आप क्या समझते हैं? (15)

अथवा

P.T.O.

रचनात्मक लेखन के विविध रूपों पर प्रकाश डालिए ।

2. जनसंचार माध्यमों के प्रसार में हिन्दी भाषा की भूमिका का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

जनसंचार माध्यमों के लिए रचनात्मक लेखन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

3. हाल में ही की गई किसी धार्मिक यात्रा का वृतांत लिखिए । (15)

अथवा

प्रिंट माध्यम के लिए किसी गीतकार का साक्षात्कार लीजिए ।

4. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए एक आकर्षक विज्ञापन बनाइये । (15)

अथवा

टी. वी. धारावाहिक के लिए रोचक संवाद लिखिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....
आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 2058 **G**

Unique Paper Code : 2051002002

Name of the Paper : Jansanchar aur Rachnatmak Lekhan(Hindi B)

Name of the Course : **Common Prog. Group AEC -2**

Semester/Annual : III

सेमेस्टर/वार्षिक

Duration : 2 Hours
समय : 2 घण्टे

Maximum Marks : 60
पूर्णांक : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. रचनात्मक लेखन का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसका महत्व प्रतिपादित कीजिए। (15)

P.T.O.

अथवा

रचनात्मक लेखन के विविध रूपों का संक्षिप्त परिचय देते हुए इसमें कल्पना के महत्व पर प्रकाश डालिए।

2. जनसंचार माध्यमों से आप क्या समझते हैं? हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने में इनकी भूमिका स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

जनसंचार माध्यमों में रचनात्मक लेखन का महत्व बताइए ।

3. अपना प्रिय यात्रा वृतांत लिखिए । (15)

अथवा

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के लिए किसी फिल्म निर्देशक का साक्षात्कार लिखिए ।

4. प्रिंट मीडिया के लिए एक आकर्षक विज्ञापन बनाइये । (15)

अथवा

रेडियो धारावाहिक के लिए रोचक संवाद लिखिए।

(10,000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5946 **G**

Unique Paper Code : 62055501

Name of the Paper : अनुवाद व्यवहार और सिद्धांत

Name of the Course : **B.A. (Prog.) HINDI GE**

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारत के भाषायी परिदृश्य से क्या अभिप्राय है और इसमें अनुवाद की क्या भूमिका है? (12)

अथवा

अनुवाद का स्वरूप स्पष्ट करते हुए इसके प्रकार बताइए।

2. प्रयुक्ति किसे कहते हैं। विविध प्रयुक्ति क्षेत्रों का वर्णन कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

व्यवसाय में अनुवाद की संभावनाओं को विस्तारपूर्वक लिखिए।

3. निम्नलिखित अनुच्छेद का हिन्दी में अनुवाद कीजिए- (10)

This afternoon, in the space of two short hours, she had been presented with three problems. The first problem was who had put the two white envelopes in her mail box. The second was the difficult questions these letters contained. The third problem was who Hilde Moller Knag could be, and why Sophie had been sent her birthday card. She was sure that these problems were interconnected in some way. They had to be, because until today she had lived a perfectly ordinary life.

अथवा

I believe that our young people are the greatest natural resource that this country has. We have tremendous untapped leadership potential among the high school students of our great America. In this program, all we are trying to do is to give these young people an opportunity to ask their questions, to find out what the realities of life and business are all about. We want to equip them beyond teaching them ABCs. We want to help them dream.

4. निम्नलिखित पंक्तियों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए- (10)

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देश की स्वतंत्रता के अभियान में हिन्दी के प्रयोग की व्यावहारिक आवश्यकता को अच्छी तरह परख लिया था। उन्हीं के निरन्तर प्रयत्नों का यह परिणाम था कि संपूर्ण देश में हिन्दी के पक्ष में एक उत्साहमय आत्मीय वातावरण का निर्माण हुआ। उन्होंने मई 1977 को एक स्थान पर लिखा है- हिन्दी ही हिन्दुस्तान के शिक्षित समुदाय की सामान्य भाषा हो सकती है यह बात निर्विवाद है। यह कैसे हो केवल यही विचार करना है। जिस स्थान को अँग्रेजी भाषा आजकल लेने का प्रयत्न कर रही है और जिसे लेना उसके लिए असम्भव है, वही स्थान हिन्दी को मिलना चाहिए क्योंकि हिन्दी पर उसका पूर्ण अधिकार है।

अथवा

यह हर साल का सिलसिला बन गया है कि जब भी दुनिया के शहरों में प्रदूषण का स्तर नापा जाता है तो भारत शहर प्रायः उसमें अधिक पाए जाते हैं। स्विस संगठन आइक्यूएआर की ताजा रिपोर्ट में दिल्ली को लगातार चौथे साल दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर बताया गया है। भारत का एक भी ऐसा शहर नहीं है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित वायु गुणवत्ता के मानक पर खरा उतरता हो। वायु गुणवत्ता मानक के अनुसार हवा में पीएम 2.5 कणों की मौजूदगी पांच माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए। मगर भारत के शहरों में यह पचास से अधिक ही दर्ज होती है। दिल्ली में यह छियानवे माइक्रोग्राम से अधिक है।

5. (क) नीचे दिए गए शब्दों में से किन्हीं **नौ** के हिन्दी प्रतिरूप लिखिए : (9)

Interval, Bonafide, Appendix, Deliberation, Currency, Division bench, Days of grace, Petitioner, Claim, Lumpsum, Hoarding, Broadcast, Formal, Notification, Major, Corporation, Discretion.

(ख) नीचे दिए शब्दों में से किन्हीं **नौ** के अंग्रेजी प्रतिरूप लिखिए : (9)

प्रायोजित, पीत पत्रकारिता, नीति, उद्घोषणा, जवाबदेही, उपविधि, समायोजन, अधिसूचना, उपकरण, परिपत्र, लाभदेय, स्वामित्व, साख-पत्र, अभिरक्षा, मंडल, वर्गीकृत विज्ञापन, पत्रकार

6. टिप्पणी कीजिए -

(क) अनुवाद में सहायक उपकरण कोश ग्रंथ। (7)

अथवा

तकनीकी अनुवाद की समस्याओं पर चर्चा कीजिए।

(ख) विधि अनुवाद की समस्याएं। (6)

अथवा

पारिभाषिक शब्दावली के बारे में बताइए।

(2000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक .....

Sr. No. of Question Paper : 5366 **G**

Unique Paper Code : 12057504

Name of the Paper : भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच सिद्धांत

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi – DSE

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नाटक और रंगमंच एक दूसरे के पूरक हैं -विवेचना कीजिए।

अथवा

नाट्यानुभूति और रंगानुभूति का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (15)

2. भरतमुनि द्वारा प्रतिपादित रस सिद्धांत का विश्लेषण कीजिए।

P.T.O.

अथवा

नाट्य-प्रस्तुति में निर्देशक के महत्व को स्पष्ट कीजिए। (15)

3. पश्चिमी नाट्यभेद त्रासदी का परिचय दीजिए।

अथवा

'मेलोड्रामा' एवं 'फार्स' का विधागत स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (15)

4. रूपक के विभिन्न भेदों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

अथवा

एकांकी के तत्वों का विवेचन कीजिए। (15)

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (7.5 + 7.5 = 15)

(क) नाटक की कथावस्तु की विशेषताएँ

(ख) पार्श्व-कर्म

(ग) कामदी

(घ) रेडियो नाटक

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 6066 **G**

Unique Paper Code : 62057503

Name of the Paper : Hindi Rangmanch

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi CBCS-DSE - I**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. रामलीला की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (14)

अथवा

विदेसिया नाट्य शैली का विवेचन कीजिए।

2. पृथ्वी थियेटर की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (14)

P.T.O.

अथवा

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी रंगमंच के विकास में रंगमंडल, भारत भवन, भोपाल की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

3. आधुनिक हिंदी रंगमंच में प्रयुक्त लोकशैली की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। (14)

अथवा

एब्सर्ड नाट्य शैली का परिचय दीजिये।

4. आगूराम देवांगन की रंगयात्रा पर प्रकाश डालिए। (14)

अथवा

राधेश्याम कथावाचक की रंगदृष्टि स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए। (6,6,7)

(क) पांडवानी

(ख) राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

(ग) स्वांग

(घ) माधवप्रसाद शुक्लयुगीन रंगमंच

(ङ) भारतेंदु नाट्य अकादमी

(5000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 6162 **G**

Unique Paper Code : 62057503

Name of the Paper : Hindi Rangmanch

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi CBCS-DSE - I**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. पारंपरिक नाट्य शैली की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए नौटंकी शैली का वर्णन करें। (14)

अथवा

प्राचीन भारतीय रंग परंपरा और आधुनिक रंगमंच की विशेषताओं की तुलना कीजिए।

P.T.O.

2. पारसी रंगमंच की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (14)

अथवा

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एवं भारतेंदु नाट्य अकादमी, लखनऊ के रंग प्रशिक्षण में योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

3. शैलीबद्ध रंगमंच की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। (14)

अथवा

आधुनिक हिंदी रंगमंच की विविध शैलियों का परिचय दीजिए।

4. सत्यदेव दुबे की रंगयात्रा पर प्रकाश डालिए। (14)

अथवा

ब.व.कारंत की रंगदृष्टि को स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए। (6,6,7)

(क) भिखारी ठाकुर

(ख) पृथ्वी थियेटर

(ग) सांग

(घ) रासलीला

(ङ) भारत भवन, भोपाल

(4)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5210 G

Unique Paper Code : 12051501

Name of the Paper : Pashchatya Kavyashastra

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के त्रासदी सिद्धांत का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

उदात्त की अवधारणा पर विचार करते हुए उनके अवरोधक तत्त्वों पर प्रकाश डालिए।

2. कॉलरिज के कल्पना सिद्धांत का निरूपण कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

वस्तुनिष्ठ सहसंबंध सिद्धांत की विवेचना कीजिए।

3. स्वछंदतावाद पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

संरचनावाद का सामान्य परिचय दीजिए।

4. प्रतीक को उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

बिंब से आप क्या समझते है ? बिंब के विविध प्रकारों का विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए - (9,9,9)

(क) विरेचन सिद्धांत

(ख) काव्य भाषा पर वर्ड्सवर्थ

(ग) मार्क्सवादी आलोचना

(घ) निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत

(ङ) मिथक